चौथा अध्याय
वर्ण परिवर्तन

वर्ण विकृति अध्याय में वर्ण परिवर्तन (स्वर और व्यंजनों का परिवर्तन) दिखलाया गया है, पर वह इतना वैयक्तिक और शास्त्रीय है, जिससे प्राकृत भाषा की शब्दावली को अवगत करने में जिज्ञासुओं को आयास करना होगा। अतः इस अध्याय में सरलतापूर्वक ध्वनि–परिवर्तन के नियमों को सोदाहरण विवेचन किया जायगा। तथ्य यह है कि संस्कृत ध्वनियों में परिवर्तन कर प्राकृत शब्द गढ़े जाते हैं। अतः प्राकृत भाषा के वैयाकरणों ने प्राकृत की शब्दावली संस्कृत की प्रकृति–मूल शब्द मानकर सिद्ध की है।

स्वर परिवर्तन

(१) संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आ, इ, ई, उ, ए, ओ, अइ और आइ में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण–

(क) अ = आ–संस्कृत की अ ध्वनि का विकल्प से आ में परिवर्तन।

आहिआई, अहिआई < अभियाति–अ को विकल्प से दीर्घ, मध्य और अन्त्य य तथा त का लोप, अ और ह स्वर शेष, दीर्घ।

आफंसो, अफंसो < अस्पर्शः–अ को विकल्प से दीर्घ, संयुक्त स का लोप, प को फ, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

चाउरंतं, चउरंतं < चतुरन्तम्–चकारोत्तर अ को दीर्घ, त लोप, उ शेष।

दाहिणो, दक्खिणो < दक्षिणः–दकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क्ष को विकल्प से ह, विकल्पाभावपक्ष में क्ख।

पारकेरं, परकेरं < परकीयम्–पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीयं के स्थान पर केरं।

पारक्कं, परक्कं < परकीयम्–पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीयं को क्कं।

पुणा, पुण < पुनः–न को ण एवं विकल्प से दीर्घ।

पायडं, पयडं < प्रकटम्–प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क लोप, अस्वर और य श्रुति, ट को ड।

पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपत्–प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, प का व और त् का आ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धिः–प्र के संयुक्त रेफ का लोप और अ को विकल्प से दीर्घ, अन्तिम इकार को दीर्घ।

पाडिफदी, पडिफदी < प्रतिस्पर्धी–प्र के संयुक्त रेफ का लोप, अ को विकल्प से दीर्घ, स लोप और प को फ तथा संयुक्त रेफ का लोप, ध को द्वित्व और पूर्व को द।

पावयणं, पवयणं < प्रवचनम्–प्र के संयुक्त रेफ का लोप, अ को विकल्प से दीर्घ, च लोप और स्वर को य श्रुति, न को ण।

पारोहो, परोहो < प्ररोहः–प्र के संयुक्त रेफ का लोप और अ को विकल्प से दीर्घ।

पावासू, पवासू < प्रवासी– ,, ,, ,, ,,

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः– ,, ,, ,, ,,

पासुत्तो, पसुत्तो < प्रसुप्तः– ,, ,, ,, संयुक्त प लोप और त को द्वित्व।

माणंसी, मणंसी < मनस्वी–मकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, न को ण, अनुस्वार और संयुक्त व का लोप।

माणंसिणी, मणंसिणी < मनस्विनी ,, ,, ,,

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः–सकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, मकारोत्तर ऋ को इ और इकार को ईकार।

सारिच्छो, सरिच्छी < सदृक्षः–सकारोत्तर अ को दीर्घ और दृक्षः के स्थान पर रिच्छो।

(ख) अ = इ संस्कृत की अ ध्वनि का इ में परिवर्तन।

इसि < ईषत्–दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार, षकारोत्तर अ को इकार और अन्तिम हलन्त्य व्यंजन त् का लोप।

उत्तिमो < उत्तमः–तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग का ओत्व।

कइमो < कतमः–तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग को ओत्व।

किविणो < कृपणः–कृ में रहने वाली ऋ को इ, प को व और अकार को इकार, विसर्ग को ओत्व।

दिण्णं < दत्तं–दकारोत्तर अकार को इत्व तथा त्तं के स्थान पर ण्णं।

मिरिअं < मरिचम्–मकारोत्तर अकार को इकार, च का लोप और अ स्वर शेष।

मज्झिमो < मध्यमः–संयुक्त य का लोप, ध के स्थान पर झ, द्वित्व और पूर्ववर्ती झ को ज् तथा अ को इकार।

मुइंगो < मृदङ्गः–मृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, द लोप और अ स्वर के स्थान पर इत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वेडिसो < वेतसः–त को ड और अकार के स्थान पर इत्व।

विअणं < व्यजनम्–संयुक्त य का लोप और अ को इत्व, ज लोप तथा अ स्वर शेष।

विलीअं < व्यलीकम्–संयुक्त य का लोप और अ को इत्व, क लोप और अ स्वर शेष।

सिविणो < स्वप्नः–स्व का पृथक्करण, अ को इत्व तथा न को णत्व, विसर्ग का ओत्व।

इंगारो, अंगारो < अङ्गारः–विकल्प से अ के स्थान पर इत्व।

पिक्कं, पक्कं < पक्वम्–पकारोत्तर अकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त व का लोप और क को द्वित्व।

णिडालं, णडालं < ललाटम्–लकारोत्तर अ को विकल्प से इत्व, ट को ड।

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्णः –सप्त के स्थान पर छत्त, अकार को इत्व, प की व तथा संयुक्त रेफ का लोप, ण को द्वित्व एवं विसर्ग का ओत्व।

(ग) अ = ई–शब्द के आदि में रहने वाली संस्कृत की अ ध्वनि ई में परिवर्तित हो जाती है।

हीरो, हरो < हरः–हकारोत्तर अकार को ईत्व।

(घ) अ = उ–संस्कृत की अ ध्वनि का उ ध्वनि में परिवर्तन अर्थात् संप्रसारण।

गउओ < गवयः–पकारोत्तर अ के स्थान पर उ और य लोप, अ शेष, विसर्ग को ओत्व।

गउआ < गवयाः–वकारोत्तर अ के स्थान पर उ, य लोप और स्वर शेष, स्त्रीलिंग।

झुणी < ध्वनिः–संयुक्त व का लोप, ध को झ, अकार को उत्व, न को ण।

वीसुं < विष्वक्–संयुक्त व लोप, अ को उत्व।

तुरिअं < त्वरितम्–संयुक्त व लोप, अ को उत्व।

सुअइ, सुवइ < स्वपिति–संयुक्त त लोप, अ को उत्व।

खुडिओ, खंडिओ < खण्डितः–विकल्प से खकारोत्तर अकार को उ, त लोप और अ स्वर शेष।

चुडं, चंडं < चण्डम्–चकारोत्तर अकार को वैकल्पिक उ।

पुढमं, पढुमं, पुढुमं, पढमं < प्रथमम्–विकल्प से पकारोत्तर अकार को उ थकारोत्तर अकार को क्रमशः दोनों अकार को उ तथा थ के स्थान पर ढ।

(ङ) अ = ऊ–संस्कृत की अ ध्वनि का ऊ में परिवर्तन।

अहिण्णू < अभिज्ञः–भ के स्थान पर ह, ज्ञ के स्थान पर ण्ण तथा अ का ऊ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

आगमण्णू < आगमज्ञः–ज्ञ के स्थान पर ण्ण और अ को ऊत्व।

कयण्णू < कृतज्ञः–त का लोप, ज्ञ के स्थान पर ण्ण और अ को ऊत्व।

विण्णू < विज्ञः–ज्ञ को ण्ण और अ को ऊत्व।

सव्वण्णू < सर्वज्ञः–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ज्ञ को ण्ण तथा अ को ऊत्व।

(च) अ = ए–संस्कृत की अ ध्वनि का प्राकृत में एकार परिवर्तन होता है।

एत्थ < अत्र –अ के स्थान पर ए, त्र के स्थान पर त्थ।

अंतेउरं < अन्तःपुरम्–तकारोत्तर अकार को एकार, पकार का लोप और उ स्वर शेष।

अंतेआरी < अन्तश्चारी–तकारोत्तर अकार को एकार, चकार लोप और आ स्वर शेष।

गेंदुअं < कन्दुकम्–क के स्थान पर ग तथा अकार को एकार और क लोप, अ स्वर शेष।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्–संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान पर म्ह, चकारोत्तर अकार को एकार, संयुक्त य का लोप।

सेज्जा < शय्या–तालव्य श को दन्त्य स, अकार को एकार और य को ज।

सुंदेरं < सौन्दर्यम्–सकारोत्तर औकार को उकार, दकारोत्तर अ को एकार और संयुक्त य का लोप।

अच्छेरं, अच्छरिअं < आश्चर्यम्–श्च के स्थान पर च्छ तथा विकल्प से अकार को एकार।

उक्केरो, उक्करो < उत्करः –संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और ककारोत्तर अकार को एकार।

पेरंतो, पज्जंतो < पर्यन्तः–पकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार, विकल्पाभाव में र्य के स्थान पर ज्ज।

वेल्ली, वल्ली < वल्ली–वकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार।

(छ) अ = ओ– संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में ओ रूप में परिवर्तित होती है।

नमोक्कारो < नमस्कारः–मकारोत्तर अकार की ओकार, संयुक्त स का लोप और क को द्वित्व।

परोप्परं < परस्परम्–रकारोत्तर अकार को ओकर, संयुक्त स का लोप और प को द्वित्व।

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति–अ को विकल्प से ओ, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व और य को एत्व तथा त लोप और इ स्वर शेष।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सोवइ, सुवइ < स्वपिति–संयुक्त व का लोप, पश्चात् सकारोत्तर अकार को ओकार, प को व और विभक्ति चिह्न इ।

ओप्पिअं, अप्पिअं < अर्पितम्–विकल्प से अकार को ओकार, रेफ का लोप और प को द्वित्व, त लोप और अ स्वर शेष।

पोम्मं < पद्मम्–पकारोत्तर अकार को ओकार, द्म के स्थान पर म्म।

(ज) अ = अइ–संस्कृत के मय प्रत्ययान्त शब्दों में विकल्प से मकारोत्तर अकार को प्राकृत में अइ होता है।

जलमइअं, जलमअं < जलमयम्–मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष।

विसमइअं, विसमअं < विषमयम्–मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष।

दुहमइअं, दुहमअं < दुःखमयम्–ख के स्थान पर ह, मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप, अ स्वर शेष।

सुहमइअं, सुहमअं < सुखमयम्– ,, ,, ,, ,,

(झ) अ = आइ–संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आइ भी होती है।

न उणाइ, न उणो < न पुनः–प का लोप, उ स्वर शेष तथा नकारोत्तर अकार को विकल्प से आइ।

पुणाइ, पुणो < पुनः– ,, ,, ,, ,, ,,

(२) संस्कृत की आ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ऊ, ए और ओ में परिवर्तित हो जाती है।

(क) आ = अ–संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में अ रूप में परिवर्तित हो जाती है।

आचरिओ < आचार्यः–च लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति, चा में रहने वाले आ को अ, र्य को रिओ।

कंसिओ < कांसिकः–कां के स्थान पर कं आकार को अकार।

कंसं < कांस्यम्– ,, ,, ,, संयुक्त य लोप।

पंडवो < पाण्डवः–पा के स्थान पर प।

पंसणो < पांसनः– ,, ,,

पंसू < पांसुः– ,, ,,

मरहट्टो < महाराष्ट्रः–हा और रा के स्थान पर ह, र तथा वर्णव्यत्यय, संयुक्त ष और रेफ का लोप, ट को द्वित्व।

मंसं < मांसम्–मां के आकार को अकोर।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वंसियो–वांशिकः–वां के आकार को अकार, तालव्य श को दन्त्य स, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

सामओ < श्यामाकः–संयुक्त य का लोप, मा के आकार को अकार, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

संजत्तिओ < सांयत्रिकः–सां के स्थान पर सं, य को ज, संयुक्त रेफ का लोप त की द्वित्व, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

संसिद्धिओ < सांसिद्धिकः–सां के स्थान पर सं, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

उक्खयं, उक्खायं < उत्खातम्–संयुक्त त का लोप, ख को द्वित्व, पूर्ववर्ती ख को क तथा विकल्प से खा को ख, त लोप, अ स्वर शेष, य श्रुति।

पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो < पूर्वाह्णः–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, आ को विकल्प से अ।

कलओ, कालओ–कालकः–का में रहने वाले आ को विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कुमरो, कुमारो–कुमारः–मा में रहने वाले आ को विकल्प से अ।

खइरं, खाइरं < खादिरम्–खा के स्थान पर विकल्प से ख, द लोप और इ स्वर शेष।

चमरो, चामरो < चामरः–चा को विकल्प से च।

तलवेंटं, तालवेंटं < तालवृन्तम्–ता को विकल्प से त तथा वृन्तम् को वेंटं।

नराओ, नाराओ < नाराचः–विकल्प से ना को न, च लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

पययं, पाययं < प्राकृतम्–संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, त लोप, स्वर शेष तथा यश्रुति।

बलया, बलाया < बलाका–ला के स्थान पर विकल्प से ल, क लोप, आ स्वर शेष और यश्रुति।

बम्हणो, बाम्हणो < ब्राह्मणः–संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, ह्म को म्ह।

ठविओ, ठाविओ < स्थापितः –संयुक्त स का लोप, थ को ठ तथा आकार को विकल्प से अकार, प को व, त लोप, अ स्वर शेष, ओत्व।

परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ < परिष्ठापितः–ठा को विकल्प से ठ।

संठविओ, संठाविओ < संस्थापितः– संयुक्त स का लोप, था को विकल्प से थ और थ के स्थान पर ठ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

हलिओ, हालिओ < हालिकः–हा के स्थान पर विकल्प से ह, क लोप, स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

अहव, अहवा < अथवा–थ के स्थान पर ह और वा को विकल्प से व।

तह, तहा < तथा–थ के स्थान पर ह और था में रहने वाले आकार को विकल्प से अकार।

जह, जहा < यथा– ,, ,, ,,

व, वा < वा–वा में रहने वाले आकार को विकल्प से व।

ह, हा < हा–हा ,, ,,

(ख) आ = इ–संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में इ के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः–च का लोप, आ स्वर शेष और इस आ के स्थान पर विकल्प से इत्व।

कुप्पिसो, कुप्पासो < कूर्पासः–ऊकार के स्थान पर उकार, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व तथा आकार को विकल्प से इकार।

निसिअरो, निसाअरो < निशाकरः–तालाव्य श को दन्त्य स तथा सा में रहने वाले आ को विकल्प से इकार, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(ग) आ = ई–निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ई में परिवर्तित होती है।

खल्लीडो < खल्वाटः–संयुक्त व का लोप, ल को द्वित्व और आकार को ईकार तथा ट को ड, विसर्ग को ओत्व।

ठीणं, थीणं < स्त्यानम्–संयुक्त स का लोप, त्य के स्थान में थ और थ को ठ तथा आकार को ईकार, न को ण।

(घ) आ = उ

उल्लं–आर्द्रम्–आ के स्थान पर उ, र्द्र को ल्ल।

सुण्हा < सास्ना–सा में रहने वाले आ को उकार और स्ना के स्थान पर ण्हा।

थुवओ < स्तावकः–स्त के स्थान पर थ और आकार को उकार, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ङ) आ = ऊ

अज्जू < आर्या–सासू अर्थ होने से र्य के स्थान पर ज्ज और आकार को ऊकार।

ऊसारो, आसारो < आसारः–आ के स्थान पर विकल्प से ऊ।

(च) आ=ए– निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ए में परिवर्तित होती है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

गेज्झं < ग्राह्यम्–संयुक्त रेफ का लोप, आकार को एकार, ह्य के स्थान पर ज्झ।

असहेज्जो, असहज्जो < असहाय्यः–हा के स्थान पर विकल्प से हे और य्य को ज्ज, विसर्ग को ओत्व।

एतिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्–एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्–ज को लोप और अ स्वर शेष, मा के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

देरं, दारं < द्वारम्–संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार।

पारेवओ, पारावओ < पारापतः–रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं < पश्चात्कर्म–पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार को विकल्प से एकार।

(छ) आ = ओ

ओल्लं < आर्द्रम्–आ के स्थान पर ओ, र्द्र के स्थान पर ल्ल।

ओली < आली–आ के स्थान पर ओ।

(३) संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, ई, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित होती है।

(क) इ= अ–निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है।

इअ < इति–तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ।

तित्तिरो < तित्तिरिः–रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि।

पहो < पथिन्–थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हलन्त्य अन्त्य व्यंजन का लोप।

पुहई < पृथिवी–पृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थ के स्थान पर ह इकार को अकार और व लोप, ई स्वर शेष।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्–प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और त् को आ।

बहेडओ < विभीतकः–व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह, इ को ए, त के स्थान पर ड, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

मुसओ < मूषिकः–मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

हलद्दा < हरिद्रा–र के स्थान पर ल, इकार को अकार और द्रा में से रेफ का लोप और द को द्वित्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

इंगुअं, अंगुअं < इंगुदम्–इ के स्थान पर विकल्प से अ, द लोप और अ स्वर शेष।

सिढिलं, सढिलं < शिथिलम्–तालव्य श का दन्त्य स, स में रहने वाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को ढ।

पसिढिलं, पसढिलं < प्रशिथिलम्–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, थ को ढ।

(ख) इ=ई–निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है।

जीहा < जिह्वा–जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप।

वीसा <विंशति–वि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप।

तीसा<त्रिंशत्–त्रि में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप।

सीहो < सिंहः–सि में संयुक्त इकार को ईकार, अनुरवार लोप।

नीसरई, निस्सरइ< निस्सरति–नि में रहने वाली इकार को विकल्प से दीर्घ।

नीसहं, निस्सहं < निस्सहम्– ,, ,, ,, ,,

(ग) इ = उ–निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है।

उच्छू < इक्षुः–इ के स्थान पर उ और क्षु के स्थान पर च्छू।

दु < द्वि–संयुक्त व का लोप और इकार को उकार।

दुविहो < द्विविधः–संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

णु < नि–नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण।

दुआई< द्विजातिः–संयुक्त व का लोप और इकार लोप के स्थान पर उकार, ज और आ स्वर शेष, त लोप और इकार को दीर्घ।

नु < नि–इकार को उकार।

दुहा < द्विधा–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह।

णुमज्जइ< निमज्जति–नि में रहने वाली इ के स्थान पर उ और न को णत्व, त का लोप, इ स्वर शेष।

दुमत्तो < द्विमात्रः–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो।

णुमन्नो < निमग्नः–नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व।

दुरेहो < द्विरेखः–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ख को ह।

पावासु < प्रवासिन्–संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहने वाली इ के स्थान पर उ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुवयणं < द्विवचनम्–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, च के स्थान पर य, न को णत्व।

पावासुओ < प्रवासिकः– संयुक्त रेफ का लोप, अ को दीर्घ, सि में रहने वाली इकार को उकार, क लोप और विसर्ग को ओत्व।

जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो < युधिष्ठिरः–य को ज, ध को ह तथा इकार के स्थान पर विकल्प से उकार, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व, पूर्व ठ को ट और र को ल।

दुउणो, विउणो <द्विगुणः–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ग लोप और उ स्वर शेष। विकल्प से द का लोप होने पर विउणो रूप बनेगा।

दुइओ, विइओ < द्वितीयः– संयुक्त व का लोप, इकार को उत्व, त लोप, ई शेष और ह्रस्व, य लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(घ) इ = ए

मेरा > मिरा–मि में रहने वाली इ को एकार।

केसुअं, किंसुअं < किंशुकम्–इकार को एकार, क लोप और अ स्वर शेष। इकार को एत्व न होने पर किंसुअं रूप बनता है।

(ङ) इ = ओ

दोवयणं < द्विवचनम्–संयुक्त व का लोप और इकार को ओत्व, मध्यवर्ती च लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

दोहा, दुहा<द्विधा–संयुक्त व का लोप, इकार को विकल्प से ओत्व, ध को ह।

(च) नि = ओ

ओज्झरो, निज्झरो < निर्झरः–निर्झर शब्द में विकल्प से नि के स्थान पर ओ होता है, तथा संयुक्त रेफ का लोप, झ को द्वित्व, पूर्ववर्ती झ को ज।

(४) संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में अ, आ, इ, उ, ऊ और ए में परिवर्तित होती है।

(क) ई = अ

हरडई < हरीतकी–री में ई के स्थान पर अ, त को ड और क लोप तथा ई स्वर शेष।

(ख) ई = आ–

कम्हारा < कश्मीराः–श्म के स्थान पर म्ह तथा ईकार के स्थान पर आ।

(ग) ई = इ–निम्न शब्दों में संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में इ हो जाती है।

ओसिअंतं < अवसीदत्–अव=ओ, सी के स्थान पर सि, दत् = अंतं।

आणिअं < आनीतम्–नी के स्थान पर ह्रस्व इकार होने से णि, त लोप और अ स्वर शेष।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

गहिरं < गभीरम्–भ के स्थान पर ह, दीर्घ इकार को ह्रस्व इकार।

जिवउ < जीवतु–जी को ह्रस्व इ करने से जि, त लोप और उ स्वर शेष।

तयाणिं < तदानीम्–द लोप और आ स्वर शेष, यश्रुति, नी को नि, णत्व।

तइअं < तृतीयम्–तृ में रहने वाली ऋ को अ, त लोप, ईकार को इकार, य लोप और अ स्वर शेष।

दुइअं < द्वितीयम्–संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, त लोप और ईकार को इकार, य लोप और अ स्वर शेष।

पलिविअं < प्रदीपितम्–संयुक्त रेफ का लोप, दी के स्थान पर ली और ईकार को ह्रस्व, प को व, त लोप और अ स्वर शेष।

पसिओ < प्रसीदः–संयुक्त रेफ का लोप, सी को ह्रस्व, द लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

वम्मिओ < वल्मीकः–संयुक्त ल का लोप, म को द्वित्व, दीर्घ ईकार को ह्रस्व, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

विलिअं < व्रीडितम्–संयुक्त रेफ का लोप, दीर्घ ईकार को ह्रस्व, ड को ल, त लोप और अ स्वर शेष।

सिरिसो < शिरीषः–तालव्य श को दन्त्य स, री को ह्रस्व, मूर्धन्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

अलिअं, अलीअं < अलीकम्–ल में रहने वाली दीर्घ ईकार को विकल्प से ह्रस्व, क लोप और अ स्वर शेष।

उवणिअं, उवणीअं < उपनीतम्–प को व, न को ण, ईकार को विकल्प से ह्रस्व, त का लोप और अ स्वर शेष।

करिसो, करीसो < करीषः–री के स्थान पर विकल्प से रि, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

जिवइ, जीवइ < जीवति–जकारोत्तर ईकार को विकल्प से इकार, तकार का लोप, इ स्वर शेष।

पाणिअं, पाणीअं < पानीयम्–न को ण, नकारोत्तर ईकार को विकल्प से इकार, यकार का लोप और अ स्वर शेष।

(घ) ई = उ

जुण्णं, जिण्णं < जीर्णम्–जकारोत्तर ईकार के स्थान पर विकल्प से उकार और उकाराभावपक्ष में इ, संयुक्त रेफ का लोप, ण को द्वित्व।

(ङ) ई = ऊ

तूहं < तीर्थम्–तकारोत्तर ईकार के स्थान पर ऊकार, संयुक्त रेफ का लोप, थ के स्थान पर ह।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

विहूणो, विहीणो < विहीनः–हकारोत्तर ईकार को विकल्प से ऊकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

हूणो, हीणो < हीनः– ,, ,, ,,

(च) ई = ए–संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है।

आमेलो < आपीडः–पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को ल।

केरिसो < कीदृशः–ककारोत्तर ईकार को एकार, दृशः के स्थान पर रिसो।

एरिसो < ईदृशः–ई के स्थान पर एकार, दृशः के स्थान पर रिसो।

पेऊसं < पीयूषम्–पकारोत्तर ईकार की एत्व, य लोप और ऊ स्वर शेष, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

वहेडओ < विभीतकः–इकार को अकार, भकारोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

नेडं, नीडं < नीडम्–नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार।

पेढं, पीढं < पीठम्–पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ठ को ढ।

(५) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है।

(क) उ = अ–निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है।

अगरुं < अगुरुम्–गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ।

गलोइ < गुडूची–गकारोत्तर उकार को अ, ड को ल और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर शेष, पश्चात् ह्रस्व।

गरुई < गुर्वी–गकारोत्तर उकार को अ, र्वी का पृथक्करण अतः रुई।

मउडो < मुकुटः–मकारोत्तर उकार का अ, क लोप और ट को ड।

मउरं < मुकुरम्–मकारोत्तर उकार का अ, क लोप और क लोप।

मउलो < मुकुलः– ,, ,, ,,

मउलं < मुकुलम्– ,, ,, ,,

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्–औ को ओकार होने से सो, क का लोप और उसके स्थान में उ स्वर शेष, उकार को अ तथा मार्यं का मल्लं।

अवरिं, उवरिं < उपरि–उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को व।

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः–गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ख) उ = इ–संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है।

पुरिसो < पुरुषः–रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पउरिसं < पौरुषम्–औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ + उ, रकारोत्तर उ को इत्व।

भिउडी < भ्रुकुटिः–संयुक्त रेफ का लोप, उकार को इकार, क लोप, उ स्वर शेष और ट को ड।

(ग) उ = ई

छीअं < क्षुतम्–क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त लोप और अ स्वर शेष।

(घ) उ = ऊ

दूहवो, दुहओ < दुर्भगः–दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह और ग लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

मूसलं, मुसलं < मुसलम्–मकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्सहः–दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

सूहवो, सुहओ < सुभगः–सकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, भ को ह, ग लोप और अ स्वर शेष।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुऊहलं < कुतूहलस्–ककारोत्तर उकार को ओत्व, तकार का लोप, ऊ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से ह्रस्व।

(६) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है।

(क) ऊ = अ–निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है।

दुअल्लं, दुऊलं < दुकूलम्–मध्यवर्ती क लोप, ऊ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ।

सण्हं, सुण्हं < सूक्ष्मम्–सकारोत्तर ऊकार के स्थान पर विकल्प से अकार, क्ष्म के स्थान पर ण्ह।

(ख) ऊ = इ

निउरं, नुउरं < नूपुरम्–ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का लोप उ शेष।

(ग) ऊ = ई

उव्वीढं, उव्वूढं < उद्व्यूढम्–द् य् का लोप और व को द्वित्व और ऊकार को विकल्प से ईकार।

(घ) ऊ = उ–निम्न लिखित शब्दों में ऊकार के स्थान पर उत्व होता है।

कंडुअइ < कण्डूयते–ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का लोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कंडुया < कण्डूया–ऊकार के स्थान पर उकार।

कंडुयणं < कण्डूयणम्–ऊकार को उत्व तथा न को णत्व।

भुमया < भ्रूः–ऊकार के स्थान पर उत्व।

वाउलो < वातूलः–तकार का लोप और ऊ स्वर शेष, ऊ के स्थान में उत्व।

हणुमंतो < हनूमान्–नकार को णत्व और ऊकार को उत्व।

कोउहलं, कोऊहलं < कुतूहलम्–ककारोत्तर उकार की ओकार, तकार का लोप और ऊकार के स्थान पर विकल्प से उत्व।

महुअं, महूअं<मधूकम्–ध के स्थान पर ह और ऊकार को विकल्प से उत्व।

(ङ) ऊ = ए

नेउरं, नूउरं < नूपुरम्–ऊकार के स्थान पर एत्व और पकार का लोप और उ स्वर शेष।

(च) ऊ = ओ–निम्न लिखित शब्दों में ऊ को ओ होता है।

कोप्परं < कूर्परम्–ऊकार को ओकार, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व।

कोहण्डी < कूष्माण्डी–ककारोत्तर ऊकार को ओत्व, ष्मा के स्थान पर ह।

गलोई < गुडूची–डकार के स्थान पर ल, डकारोत्तर ऊकार को ओ एवं चकार का लोप, ई शेष।

तंबोलं < ताम्बूलम्–ता को ह्रस्व, बकारोत्तर ऊकार को ओत्व।

तोणीरं < तूणीरम्–ऊकार को ओत्व।

मोल्लं < मूल्यम्–मकारोत्तर ऊकार को ओत्व, संयुक्त य का लोप और ल को द्वित्व।

थोरं < स्थूलम्–संयुक्त स का लोप, थकारोत्तर ऊकार को ओत्व एवं ल को रकार।

तोणं, तूणं < तूणम्–तकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व।

थोणा, थूणा < स्थूणा–संयुक्त स का लोप और थकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व।

(७) प्राकृत वर्णमाला में ऋ को स्थान नहीं दिया गया है। अतः संस्कृत की ऋ का परिवर्तन अ, आ, इ, उ, ऊ, ए, ओ, अरि और रि के रूप में होता है।

(क) ऋ = अ–निम्न लिखित शब्दों में आदि में आने वाली ऋ अ के रूप में बदल जाती है।

कयं < कृतम्–ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

घयं < घृतम्–घकारोत्तर ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

घट्ठो<घृष्टः–घकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व।

तणं < तृणम्–तकारोत्तर ऋ के स्थान अ।

मओ < मृगः–मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ग लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

मट्ठं < मृष्टम्–मकरोतर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप और ट को द्वित्व।

वसहो < वृषभः–वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विसर्ग का ओत्व।

दुक्कडं < दुष्कृतम्–संयुक्त ष का लोप, क को द्वित्व, ऋ के स्थान पर अ एवं त के स्थान पर ड।

पुरेकडं < पुरस्कृतम्–रकारोत्तर अ को एत्व, संयुक्त स का लोप, ऋ के स्थान पर अ, त को ड।

मट्टिया < मृत्तिका–मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त को ट तथा ककार का लोप, आ स्वर शेष, य श्रुति।

णिअत्तं < निवृत्तम्–न को णत्व, वकारोत्तर ऋकार को अ।

मच्चु < मृत्यु–मकारोत्तर ऋ को अ और त्य के स्थान पर च्च।

मउओ < मृदुकः– ,, द लोप, उ स्वर शेष, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वन्दारओ < वृन्दारकः–वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वगी < वृकी–वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ तथा क को ग।

कसणपक्खो < कृष्णपक्षः–ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ष्ण का पृथक्करण मूर्धन्य ष् को दन्त्य स तथा क्ष को क्ख।

पाययं < प्राकृतम्–ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और इस अ को य श्रुति, त लोप, अ स्वर शेष और अ को य।

वहप्फई < वृहस्पतिः–वकारोत्तर ऋकार को अत्व, स्प के स्थान पर प्फ।

सिलवटो < शिलापृष्ठः–तालव्य श को दन्त्य स, लकार को ह्रस्व, प का व और ऋ को अ।

मअलांछणं < मृगलाञ्छनम्–मकरोत्तर ऋकार को अत्व, ग लोप और अ स्वर शेष।

मअवहू < मृगवधू–मकरोतर ऋ के स्थान पर अ, ध के स्थान पर ह।

रामकण्हो < रामकृष्णः–ककारोत्तर ऋकार को अ और ष्ण को ण्ह।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) ऋ=आ–निम्न शब्दों में विकल्प से ऋ के स्थान पर आ आदेश होता है।

कासा, किसा < कृशा–ककारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व।

माउक्कं, मउत्तणं < मृदुत्वम्–मकरोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व।

माउक्कं, मउअं < मृदुकम्– ,, ,, ,, ,,

(ग) ऋ = इ–निम्न शब्दों में संस्कृत की ऋ ध्वनि इ में परिवर्तित होती है।

उक्किट्ठं <उत्कृष्टम्–संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और ऋ के स्थान पर इ।

इद्धी < ऋद्धिः–ऋ के स्थान पर इ।

इसी < ऋषिः–ऋ के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष को सत्व और इकार को दीर्घ।

किच्छं < कृच्छ्रम्–क ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ।

किविणो < कृपणः– ,, ,, तथा प का व और विसर्ग का ओत्व।

किई < कृतिः–ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, त लोप और इ स्वर को दीर्घ।

किच्ची < कृत्तिः–क में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ, त्तं के स्थान पर च्च।

किच्चा < कृत्या–क में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ, त्य के स्थान पर च्च।

किवो < कृपः–ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ और प को व।

किवा < कृपा– ,, ,, ,, ,,

किवाणं < कृपाणम्– ,, ,, ,, ,,

किदो < कृशः– ,, ,, ,, श के स्थान पर 'द'।

किसाणू < कृशानुः– ,, ,, ,, तालव्य श को स, उकार की ऊत्व।

किसिओ < कृषितः–ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष के स्थान पर दन्तय स, त लोप और अ स्वर शेष तथा ओत्व।

किसरा < कृसरा–ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ।

गिट्ठी < गृष्टिः–गकारोत्तर ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष लोप, ट को द्वित्व।

गिद्धी < गृद्धिः–गकारोत्तर ऋकार को इत्व।

घुसिणं < घुसृणम्–सकारोत्तर ऋ को इत्व।

घिणा < घृणा–घकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ।

तित्तं < तृप्तम्–तकारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ, संयुक्त प लोप और त को द्वित्व।

दिट्ठं < दृष्टम्–दकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त ष लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

दिठ्ठी < दृष्टिः– ,, ,, ,, ,, ,,

जैन विश्वभारती

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

धिई< धृतिः–धकारोत्तर ऋकार को इकार, त लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

नत्तिओ < नप्तृकः–संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, ऋकार को इत्व, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

निवो < नृपः–नकारोत्तर ऋकार को इत्व और प को व, विसर्ग को ओत्व।

निसंसो < नृशंसः–नकारोत्तर ऋकार को इत्व, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

पिहं < पृथक्–पकारोत्तर ऋकार को इत्व, थ को ह, अन्त्य हलन्त का लोप, अनुस्वारागम।

पिच्छी < पृथ्वी–पकारोत्तर ऋ को इत्व, थ्वी के स्थान पर च्छी।

विंहिओ < वृंहितः–वकारोत्तर ऋकार को इत्व, त का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

भिंगो < भृङ्गः–भकारोत्तर ऋकार को इत्व, विसर्ग को ओत्व।

भिंगारो < भृङ्गारः– ,, ,, ,, ,,

भिऊ< भृगुः–भकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और उ स्वर, शेष, दीर्घ।

माई < मातृ–तकारोत्तर ऋ को इत्व तथा दीर्घ।

मिइंगो < मृदंगः–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, द का लोप, अ स्वर शेष तथा शेष अ को इत्व, विसर्ग को ओत्व।

मिट्ठुं–मृष्टम्–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

विइण्हो–वितृष्णः–तकारोत्तर ऋकार को इत्व, ष्णः के स्थान पर ण्हो।

विञ्चुओ < वृश्चिकः–वकारोत्तर ऋकार को इत्व, श्च के स्थान पर ञ्च तथा इ की उत्व, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वित्तं < वृत्तम्–वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इत्व।

वित्ती < वृत्तिः–वकारोत्तर ऋ को इत्व, तकारोत्तर इकार को दीर्घ।

विद्धकई < वृद्धकविः–वकारोत्तर ऋ को इत्व, व का लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

विट्ठो < वृष्टः–वकारोत्तर ऋ को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

विट्ठी < वृष्टिः–,, ,, ,,

विसी < वृसी–वकारोत्तर ऋ को इत्व।

वाहिअं < व्याहृतम्–संयुक्त य का लोप, हकारोत्तर ऋकार को इत्व, त का लोप और अ स्वर शेष।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सिआलो < शृगालः–तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

सिंगारो < श्रृंगारः–तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋ को इत्व और विसर्ग को ओत्व।

सइ < सकृत्–क का लोप और ककारोत्तर ऋकार को इत्व, अन्त्य हलन्त त् का लोप।

समिद्धी < समृद्धिः–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, द्धकारोत्तर इकार को दीर्घ।

सिट्ठं < सृष्टम्–सकारोत्तर ऋकार को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट को ठ।

सिट्ठी < सृष्टिः– ,, ,, ,, अन्तिम इकार को दीर्घ।

छिहा < स्पृहा–स्प में रहने वाली ऋ को इत्व, स्प के स्थान पर छ।

हिअयं < हृदयम्–हृ में रहने वाली ऋ को इत्व तथा द का लोप और अ स्वर शेष।

माइहरं < मातृगृहम्–तकारोत्तर ऋ का इत्व और गृहं की हरं।

मियतण्हा < मृगतृष्णा–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति, तकारोत्तर ऋ को अ तथा ष्ण के स्थान पर ण्ह।

मियंको, मयंको < मृगाङ्कः–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और अ स्वर को य श्रुति।

इहामियो < इहामृगः– मकारोत्तर ऋ को इत्व, ग का लोप, अस्वर शेष तथा य श्रुति, विसर्ग को ओत्व।

मियसिराओ < मृगशिराः–मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति, तालव्य श को दन्त्य स।

इसिगुत्तो < ऋषिगुप्तः–ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष को स, संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व।

इसिदत्तं < ऋषिदत्तम्–ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

धिट्ठो, धट्ठो < धृष्टः–धकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

पिट्ठं, पट्ठं < पृष्टम्–पकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

विहप्फई, बहप्फई < बृहस्पतिः–वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, स्प को प्फ, तकार का लोप और इ स्वर शेष को दीर्घ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

माइमंडलं, माउमंडलं< मातृमण्डलम्–तकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

मिच्चू, मच्चू < मृत्युः–मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व और त्युः को च्चू।

विद्धो, वुड्ढो < वृद्धः–वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

विंटं, वेंटं < वृन्तम्– वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व तथा त को ट।

सिंगं, संगं < शृङ्गम्–तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

(घ) ऋ = उ–निम्न प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऋ ध्वनि उकार में परिवर्तित है।

उऊ < ऋतुः–ऋकार को उ तथा तकार का लोप और शेष स्वर उ को दीर्घ।

उसहो < ऋषभः–ऋ को उत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, भ को ह, विसर्ग को ओत्व।

जामाउओ < जामातृकः–तकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप, क लोप, अ स्वर ओर विसर्ग को ओत्व।

नत्तुओ < नप्तृकः–संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, ऋकार को उत्व, क का लोप और शेष स्वर अ को ओत्व।

निहुअं < निभृतम्–भकार को ह तथा ऋ को उत्व, तकार का लोप और अ स्वर शेष।

निउअं < निवृतम्–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, तकार का लोप और अ स्वर शेष।

निव्वुअं < निर्वृतम्–संयुक्त रेफ का लोप, व द्वित्व, ऋकार को उत्व, त लोप और अ स्वर शेष।

निव्वुई < निर्वृत्तिः–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋकार को उत्व, त लोप और इकार शेष तथा इसको दीर्घ।

परहुओ < परभृतः–भकारोत्तर ऋकार को उत्व, भ को ह, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

परामुट्ठो < परामृष्ठः–मकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

पिउओ < पितृकः–तकारोत्तर ऋकार को उत्व, क का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

पुहई < पृथिवी–पकारोत्तर ऋकार को उत्व, थ के स्थान पर ह, इ स्वर को अ, वकार का लोप और ई स्वर शेष।

पहुडि < प्रभृति–संयुक्त रेफ का लोप, भकारोत्तर ऋकार को उत्व, त को ड।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पउत्ती < प्रवृत्तिः–संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, अन्तिम स्वर इ को दीर्घ।

पउट्ठो < प्रवृष्टः–संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

पाहुडंप्राभृतम्–संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह, ऋकार को उत्व, त को ड।

पाउओ < प्रावृतः–संयुक्त रेफ का लोप, वकार का लोप और अवशेष ऋ को उत्व, त का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

पाउसो < प्रावृषः–संयुक्त रेफ लोप, व लोप और अवशेष ऋकार को उत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

भुई < भृतिः–भकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

भाउओ < भ्रातृकः–संयुक्त रेफ का लोप, तकार का लोप, ऋकार को उत्व, क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

माउओ < मातृकः–तकार का लोप, ऋकार को उत्व, क का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

माउआ < मातृका–तकार का लोप, शेष स्वर ऋ को उत्व, क का लोप और आ स्वर शेष।

मुणालं < मृणालम्–मकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुत्तंतो < वृत्तान्तः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुड्ढो < वृद्धः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, विसर्ग का ओत्व।

वुड्ढी < वृद्धिः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, इकार को दीर्घ।

वुंदं < वृन्दम्–वकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुंदावणो < वृन्दावनः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व।

विउअं < विवृतम्–मध्यवर्ती वकार का लोप, शेष ऋ को उत्व, त लोप और अ स्वर शेष।

वुट्ठो < वृष्टः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

वुट्ठी < वृष्टिः–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ, इकार दीर्घ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पुट्ठो < स्पृष्टः–संयुक्त स का लोप, पकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

संवुअं < संवृतम्–वकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप, अ शेष।

मुसा, मोसा < मृषा–मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से उ, उ के अभाव में ओ तथा मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

उसहो, वसहो < वृषभः–वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से उत्व, विकल्पाभाव पक्ष में ऋकार को अ।

(घ) ऋ = ऊ।

मूसा, मुसा, मोसा < मृषा–मकारोत्तर ऋकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार, विकल्पाभाव पक्ष में उकार तथा ओकार होने से तीन रूप बनते हैं।

(ङ) ऋ = ए–

वेंट, विंटं < वृन्तम्–वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से एकार, विकल्पाभावपक्ष में इकार तथा त को ट।

(च) ऋ = ओ–

मोसा < मृषा–मकारोत्तर ऋ को विकल्प से ओत्व।

वोंटं < वृन्तम्–वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से ओत्व।

(छ) ऋ = अरि

दरिओ < दृप्तः–दकारोत्तर ऋकार को अरि, संयुक्त प और अन्तिम त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ज) ऋ = ढि

आढिओ < आदृतः–मध्यवर्ती दकार का लोप और शेष ऋ के स्थान पर ढि, त लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(भ) ऋ = रि–निम्न प्राकृत शब्दों में वर्तमान भाषा प्रवृत्ति के समान संस्कृत की ऋ के स्थान पर रि मिलता है।

रिच्छो < ऋक्षः–ऋ के स्थान पर रि और क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

अन्नारिसो < अन्यादृशः–संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व।

अन्नारिच्छो < अन्यादृक्षः–संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ तथा विसर्ग को ओत्व।

अमूरिसो < अमूदृशः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अमूरिच्छो < अमूदृक्षः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्षः को च्छो।

अम्हारिसो < अस्मादृशः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

अम्हारिच्छो < अस्मादृक्षः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

एरिसो < ईदृशः–ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

एरिच्छो < ईदृक्षः–ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, क्ष को च्छ और विसर्ग को ओत्व।

एआरिसो < एतादृशः–मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

एआरिच्छो < एतादृक्षः–मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ और विसर्ग को ओत्व।

केरिसो < कीदृशः–ककारोत्तर ईकार को एकार, दकार का लोप और शेष स्वर ऋकार को रि।

केरिच्छो < कीदृक्षः– ,, ,, ,, ,, ,,

तारिसो < तादृशः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व।

तारिच्छो < तादृक्षः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, क्ष को च्छ तथा विसर्ग को ओत्व।

तारि < तादृक् –दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

भवारिसो < भवादृशः– ,, श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

भवारिच्छो < भवादृक्षः–,, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

भवारि < भवादृक्– ,, ,, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

जारिसो < यादृशः–आदि यकार को जकार, द का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

जारिच्छो < यादृक्षः–आदि यकार को जकार, द का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

जारि < यादृक्–आदि य को ज, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तुम्हारिसो < युष्मादृशः–युष्मा के स्थान पर तुम्हा, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स।

तुम्हारिच्छो < युष्मादृशः–,, ,, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

तुम्हारि–युष्मादृक्– ,, ,, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

सरिसो < सदृशः–दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

सरिच्छो < सदृक्षः– ,, ,, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

सरि < सदृक्– ,, ,, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

रिज्जू, उज्जू < ऋजुः–ऋ के स्थान में विकल्प से रि, विकल्पाभाव में उ।

रिणं, अणं < ऋणम्– ,, ,, विकल्पाभाव में अ।

रिऊ, उऊ < ऋतुः– ,, ,, तकार का लोप, शेष स्वर उ को दीर्घ।

रिसहो, उसहो < ऋषभः–,, ,, विकल्पाभाव पक्ष में उ।

रिसी, इसी < ऋषिः– ,, ,, विकल्पाभाव पक्ष में इ।

(८) प्राकृत में संस्कृत की एकार ध्वनि इ और ऊ में बदल जाती है।

(क) ए = इ–

किसरं, केसरं < केसरम्–ककारोत्तर एकार को विकल्प से इत्व।

चविडा, चवेडा < चपेटा–प को व, पकारोत्तर ए को विकल्प से इ।

दिअरो, देयरो < देवरः–दकारोत्तर एकार को इत्व, वकार का लोप और अ स्वर शेष।

विअणा, वेअणा < वेदना–वकारोत्तर एकार को इत्व, इकार का लोप और अ स्वर शेष।

(ख) ए = ऊ–

थूणो, थेणो < स्तेनः–स्त के स्थान पर थ और एकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ऐकार ध्वनि का अअ, इ, ई, अइ और ए में परिवर्तन होता है।

(क) ऐ = अअ।

उच्चअं < उच्चैस्–चकारोत्तर ऐकार के स्थान पर अअ।

नीचअं < नीचैस्– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) ऐ = इ

सणिच्छरो < शनैश्चरः–तालव्य श को दन्त्य स, न को ण, नकारोत्तर ऐकार को इत्व, श्च को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

सिन्धवं < सैन्धवम्–सकारोत्तर ऐकार को इकार।

सिन्नं, सेन्न < सैन्यम्–सकारोत्तर ऐकार को विकल्प से इकार, संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व।

(ग) ऐ = ई

धीरंधैर्यम्–धकारोत्तर ऐकार को ईत्व, संयुक्त यकार का लोप और र शेष।

(घ) ऐ = अइ

अइसरिअं < ऐश्वर्यम्–ऐकार को अइ, संयुक्त व का लोप, तालव्य श को स, र्यम् को रिअं।

कइअवं < कैतवम्–ऐकार को अइ, तकार का लोप और अ स्वर शेष।

चइत्तं < चैत्यम्–चकारोत्तर ऐकार को अइ, संयुक्त य का लोप और त को द्वित्व।

दइच्चो < दैत्यः–दकारोत्तर ऐकार को अइ, त्य को च्च, विसर्ग को ओत्व।

दइअवं < दैवतम्–,, ,, ,, वर्णविपर्यय से वतम् का अवं।

भइरवो < भैरवः–भकारोत्तर ऐकार को अइ।

वइजवणो < वैजवनः–वकारोत्तर ऐकार को अइ।

वइआलीअं < वैतालीयम्– ,, ,, तकार का लोप और आ स्वर शेष।

वइदब्भो < वैदर्भः– ,, ,, संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व और पूर्ववर्ती भ को ब।

वइएसो < वैदेशः–वकारोत्तर ऐकार को अइ, मध्यवर्ती दकार का लोप, एकार शेष।

वइएहो < वैदेहः– ,, ,, ,, ,, ,,

वइसाहो < वैशाखः– ,, ,, श को स, ख के स्थान में ह और विसर्ग को ओत्व।

वइसालो < वैशालः–वकारोत्तर ऐकार को अइ, श को स।

वइस्साणरो < वैश्वानरः– ,, ,, ,, संयुक्त व का लोप, स को द्वित्व, न को ण तथा विसर्ग को ओत्व।

सइरं < स्वैरम्–संयुक्त व का लोप, सकारोत्तर ऐ को अइ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कइरवं, केरवं < कैरवम्–ककारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव पक्ष में ए।

कइलासो, केलासो < कैलासः– ,, ,, ,, ,,

चइत्तो, चत्तो < चैत्रः–चकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए।

वइरं, वेरं < वैरम्–वकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए।

वइसंपायणो, वेसंपायणो < वैशम्पायनः– ,, ,, ,,

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः– ,, ,, ,,

वइसिअं, वेसिअं < वैशिमम्– ,, ,, ,,

(ङ) ऐ = ए–

एरावणो < ऐरावणः–ऐकार को एकार।

केढवो < कैटभः–ककारोत्तर ऐकार को एकार, ट को ढ और भ को व, विसर्ग का ओत्व।

तेलुक्कं < त्रैलोक्यम्–संयुक्त रेफ का लोप, तकारोत्तर ऐकार को एत्व, संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व।

वेज्जो < वैद्यः–वकारोत्तर ऐकार को एत्व, द्य के स्थान पर ज्ज।

वेहव्वं < वैधव्यम्–वकारोत्तर ऐकार को एत्व, ध को ह, संयुक्त य लोप और व को द्वित्व।

सेला < शैला–सकारोत्तर ऐकार को एत्व।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ओ ध्वनि का अ, ऊ, अउ और आऊ में परिवर्तन होता है।

(क) ओ = अ

अन्नन्नं, अन्नुन्नं < अन्योन्यम्–संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ओ के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ।

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्–तकारोत्तर ओकार के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ, द्य के स्थान पर ज्ज।

पवट्ठो, पउट्ठो < प्रकोष्ठः–क का लोप और शेष ओ के स्थान पर अ, विकल्पाभाव में उ, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व और अंतिम ट का ठ।

मणहरं, मणोहरं < मनोहरम्–नकारोत्तर ओ के स्थान पर विकल्प से अ।

सिरविअणा, सिरोविअणा < शिरोवेदना–रकारोत्तर ओ के स्थान में विकल्प से अ।

सररुहं, सरोरुहं < सरोरुहम्– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) ओ = ऊ–

सूसासो < सोच्छ्वासः–सकारोत्तर ओकार को ऊकार।

(ग) ओ = अउ–

गउओ < गोकः–गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

गउआ < गोका–गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, आ स्वर शेष।

गउ, गऊ < गो– ,, ,, ,,

(घ) ओ = आऊ

गाऊ < गो–ओकार को आऊ हुआ है।

(१०) संस्कृत की औ ध्वनि का प्राकृत में अउ, आ, उ, आव और ओ में परिवर्तन होता है।

(क) औ = अउ–

कउरवो < कौरवः–औकार के स्थान पर अउ तथा विसर्ग को ओत्व।

कउलो < कौलः– ,, ,, ,,

कउसलं < कौशलम्–ककारोत्तर औकार को अउ, तालव्य श को दन्त्य स।

गउडो < गौडः–गकारोत्तर औकार को अउ।

गउरवं < गौरवम्– ,, ,,

पउरो < पौरः–पकारोत्तर औकार के स्थान पर अउ।

पउरिसं < पौरुषम्– ,, ,, मूर्धन्य ष को स तथा रु को रि।

मउणं < मौनम्–मकारोत्तर औकार के स्थान में अउ, न को ण।

मउली < मौलिः– ,, ,, ,,

सउहं < सौधम्–सकारोत्तर औकार को अउ तथा ध के स्थान पर ह।

सउरा < सौराः– ,, ,, ,,

(ख) औ = आ–

गारवम् < गौरवम्–औकार के स्थान आकार।

(ग) औ = उ–

दुवारिओ < दौवारिकः–दकारोत्तर औकार के स्थान पर उ, क का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

पुलोमी < पौलोमी–पकारोत्तर औकार को उत्व।

मुंजायणो < मौञ्जायनः–मकारोत्तर औकार को उत्व।

सुंडो < शौण्डः–शकार के स्थान में दन्त्य स तथा औकार को उत्व।

जैन विद्यापीठ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सुद्धोअणी < शौद्धोदनिः–तालव्य श को दन्त्य स, औकार को उत्व, द का लोप, अ स्वर शेष, न को ण।

सुगंधत्तणं < सौगन्ध्यम्–औकार को उत्व।

सुन्देरं < सौन्दर्यम्– ,, ,,

सुपण्णिओ < सौवर्णिकः–औकार को उत्व।

(घ) औ = आव

नावा < नौः–औकार के स्थान पर आवादेश।

(ङ) औ = ओ

गोरी < गौरी–गकारोत्तर औकार को ओत्व।

कोमुई < कौमुदी–ककारोत्तर औकार को ओत्व, दकार का लोप और ई स्वर शेष।

कोसंबी<कौशाम्बी–ककारोत्तर औकार को ओत्व, तालव्य श को दन्त्य स।

कोसिओ < कौशिकः– ,, ,, ,, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कोत्थुहो < कौस्तुभः–ककारोत्तर औकार को ओत्व, स्तु के स्थान में त्थु, भ को ह और विसर्ग का ओत्व।

जोव्वणं < यौवनम्–यकार को ज और औकार को ओत्व।

कोंचो < क्रौञ्चः–ककारोत्तर औ को ओत्व।

व्यंजन परिवर्तन

(११) संस्कृत की क ध्वनि का प्राकृत में ख, ग, च, भ, म, व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) क = ख

खप्परं<कर्परम्–क के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व।

खीलो < कीलः–क के स्थान पर ख, विसर्ग को ओत्व।

खीलओ–कीलकः–क के स्थान पर ख, अन्त्य क का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

खुज्जो < कुब्जः–क के स्थान पर ख, संयुक्त व का लोप और ज को द्वित्व।

(ख) क = ग–

अमुगो < अमुकः–क के स्थान पर ग और विसर्ग को ओत्व।

असुगो < असुकः– ,, ,, ,, ,,

आगरिसो < आकर्षः–क के स्थान पर ग, र्ष के स्थान पर रिस, विसर्ग का ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

आगारो < आकरः–क के स्थान पर ग और दीर्घ।

उवासगो < उपाशकः–प के स्थान पर व, तालव्य श को दन्त्य, क को ग।

एगो < एकः–क के स्थान पर ग, विसर्ग को ओत्व।

गेंदुअं < कन्दुकम्–क के स्थान पर ग और अकार को एकार अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष।

दुगुल्लं < दुकूलम्–क का ग और ऊकार को ह्रस्व उकार।

मयगलो < मदकलः–द का लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति, क के स्थान में ग।

मरगयं < मरकतम्–क के स्थान में ग, त लोप और शेष अ स्वर को य।

सावगो < श्रावकः–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, क को ग तथा विसर्ग को ओत्व।

लोगो < लोकः–क को ग, विसर्ग को ओत्व।

(ग) क = च–

चिलाओ < किरातः–क के स्थान पर च और र को ल।

(घ) क = भ–

सीभरो, सीअरो < शीकरः–तालव्य श को दन्त्य स, क को विकल्प से भ, विकल्पाभाव में क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(ङ) क = म

चंदिमा < चन्द्रिका–संयुक्त रेफ का लोप और क को म।

(च) क = व–

पवट्ठो < प्रकोष्ठः–संयुक्त रेफ का लोप, क के स्थान पर व, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती ठ को ट।

(छ) क = ह–

चिहुरो < चिकुरः–क को ह, विसर्ग को ओत्व।

निहसो < निकषः–क को ह, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

फलिहो < स्फटिकः–संयुक्त स का लोप, ट के स्थान पर ल, क के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

सीहरो < शीकरः–तालव्य श को दन्त्य स, क को ह और विसर्ग को ओत्व।

(१२) संस्कृत की ख ध्वनि प्राकृत में क में बदल जाती है।

ख = क

संकलं < शृंखलम्–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और ख के स्थान पर क।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संकला < शृंखला–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और ख के स्थान पर क।

(१३) संस्कृत की ग ध्वनि का प्राकृत में म, ल और व में परिवर्तन होता है।

(क) ग = म

पुंनामाई < पुंनागानि–ग के स्थान पर म तथा न लोप और इ स्वर, अनुस्वार।

भामिणी < भागिनी–ग के स्थान पर म और न को णत्व।

(ख) ग = ल

छालो < छागः–ग के स्थान पर ल और विसर्ग को ओत्व।

छाली < छागी–ग के स्थान पर ल।

(ग) ग = व

दूहवो < दुर्भगः–उपसर्ग के दु को दीर्घ, भ को ह और ग के स्थान में व तथा विसर्ग को ओत्व।

सूहवो < सुभगः–उपसर्ग के सु को दीर्घ, भ को ह और ग के स्थान पर व तथा विसर्ग को ओत्व।

(१४) प्राकृत में संस्कृत का च वर्ण ज, ट, ल और स में परिवर्तित होता है।

(क) च = ज

पिसाजी < पिशाची–तालव्य श को दन्त्य स और च को ज।

(ख) च = ट

आउंटणं < आकुञ्चनम्–क का लोप, उ स्वर शेष तथा च के स्थान पर टत्व, न को णत्व।

(ग) च = ल

पिसल्लो < पिशाचः–तालव्य श को दन्त्य स और च के स्थान में ल्ल, विसर्ग को ओत्व।

(घ) च = स

खसिओ < खचितः–च के स्थान पर स, अन्तिम त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(१५) संस्कृत का ज वर्ण प्राकृत में झ में परिवर्तित होता है।

झडिलो, जडिलो < जटिलः–ज के स्थान पर विकल्प से झ आदेश, ट के स्थान में ड तथा विसर्ग का ओत्व।

(१६) संस्कृत का ट वर्ण प्राकृत में ड, ढ और ल के रूप में परिवर्तित होता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(क) ट = ड

घडो < घटः–ट के स्थान में ड, विसर्ग का ओत्व।

नडो < नटः– ,, ,,

भडो < भटः– ,, ,,

(ख) ट = ढ

केढवो<कैटभः–ऐकार को एकार, ट को ढ और,भ को व, विसर्ग को ओत्व।

सयढो < शकटः–तालव्य श को स, ककार का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति तथा ट को ढ।

सढा < सटा–ट को ढ।

(ग) ट = ल

फलिहो <स्फटिकः–संयुक्त स का लोप, ट के स्थान पर ल और क को ह।

चविला < चपेटा–प को व, एकार को इत्व और ट को ल।

फालेइ < पाटयति–पा के स्थान पर फा, ट को ल, अकार को एकार तथा विभक्ति चिह्न इ।

(१७) संस्कृत की ठ ध्वनि का प्राकृत में ल, ह और ढ में परिवर्तन हो जाता है।

(क) ठ = ल

अंकोल्लो < अङ्कोठः–ठ के स्थान पर ल्ल हुआ है।

अंकोल्लतेल्लं < अङ्कोठतैलम्–ठ के स्थान पर ल्ल, तकारोत्तर ऐकार को एकार।

(ख) ठ = ह

पिहडो < पिठरः–ठ का ह और र का ड हुआ है।

(ग) ठ = ढ

पढ < पठ–ठ का ढ हुआ है।

पिढरो < पिठरः–ठ को ढ तथा विसर्ग का ओत्व।

(१८) संस्कृत का ड वर्ण प्राकृत में ल हो जाता है।

वलयामुहं < वडवामुखम्–ड के स्थान पर ल।

तलायं < तडागम्– ,, ,,

कीला < क्रीडा– ,, ,,

(१९) संस्कृत का ण वर्ण प्राकृत में विकल्प से ल में बदल जाता है।

वेलू, वेणू < वेणुः–

(२०) संस्कृत के त वर्ण का प्राकृत में च, छ, ट, ड, ण, र, ल, व और ह में परिवर्तन होता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(क) त = च

चुच्छं < तुच्छम्–त के स्थान पर च आदेश हुआ है।

(ख) त = छ

छुच्छं < तुच्छम्–त के स्थान पर छ आदेश हुआ है।

(ग) त = ट

टगरो < तगरः–त के स्थान पर ट और विसर्ग को ओत्व।

टूबरो < तूबरः– ,, ,,

टसरो<त्रसरः–संयुक्त रेफ का लोप, शेष त के स्थान पर ट, विसर्ग को ओत्व।

(घ) त = ड

पडाया < पताका–त के स्थान पर ड, क का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

पडिकरइ < प्रतिकरोति–त के स्थान पर ड और करोति का करइ।

पडिनिअत्तं <प्रतिनिवृत्तम्–त के स्थान पर ड, व का लोप, ऋ के स्थान पर अ।

पडिवया < प्रतिपत्–त के स्थान पर ड, प को व और त् के स्थान पर आ तथा यश्रुति होने से या।

पडिहासो < प्रतिभासः–त को ड, भ को ह और विसर्ग को ओत्व।

पडिमा < प्रतिमा–त को ड।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्–त के स्थान पर ड।

पडिसारो < प्रतिसारः– ,, ,,

पडिहासो < प्रतिहासः– ,, ,,

पहुडि < प्रभृति–भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड।

पाहुडं < प्राभृतम्–भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड।

मडयं < मृतकम्–मृ की ऋ के स्थान पर अ, त को ड, क लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

अवहडं, अवहयं < अवहृतम्–हृ में रहने वाली ऋ को अ, त को विकल्प से ड, विकल्पाभाव में त का लोप और यश्रुति।

ओहडं, ओहयं < अवहृतम्–अत के स्थान पर ओ, त का ड, विकल्पाभाव में त लोप और य श्रुति।

कडं, कयं < कृतम्–ककारोत्तर ऋ को अ, विकल्प से त को ड, विकल्पाभाव में त लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

दुक्कडं, दुक्कयं < दुष्कृतम् –संयुक्त ष का लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ और त के स्थान पर विकल्प से ड।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मडं, मयं < मृतम्–ऋ को अ, त को ड, विकल्पाभाव में तकार का लोप तथा अ स्वर को यश्रुति।

वेडिसी, वेअसो < वेतसः–त को ड और इत्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष।

सुकडं, सुकयं < सुकृतम्–ककारोत्तर ऋकार को अ, त को ड, विकल्पाभाव में त का लोप, अ स्वर शेष तथा यश्रुति।

(ङ) त = ण

अणिउँतयं < अतिमुक्तकम्–त के स्थान पर ण, मकार का लोप, शेष उ को अनुनासिक, संयुक्त क का लोप, अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

गब्भिणो < गर्भितः–संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व, पूर्ववर्ती महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण, त को ण, विसर्ग को ओत्व।

(च) त = र

सत्तरी < सप्ततिः–संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व और ति के स्थान पर रि तथा दीर्घ।

(छ) त = ल

अलसी < अतसी–त के स्थान पर ल।

सालवाहणो<सातवाहनः–त के स्थान पर ल, न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

पलिलं, पलिअं < पलितम्–त के स्थान पर विकल्प से ल, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष।

(ज) त = व

आवज्जं, आउज्जं<आतोद्यम्–त के स्थान पर विकल्प से व और द्य को ज्ज।

पीवलं, पीअलं < पीतलम्–त के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष।

(झ) त = ह

विहत्थी < वितस्तिः–त के स्थान पर ह और स्ति के स्थान पर त्थी।

काहलो, कायरो < कातरः–त के स्थान पर विकल्प से ह और रेफ को ल।

माहुलिंगं, माउलिंगं < मातुलिंगम्–त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और उ स्वर शेष।

वसही, वसई < वसतिः–त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा दीर्घ।

(२१) संस्कृत का थ वर्ण प्राकृत में ढ, ध और ह में परिवर्तित हो जाता है।

(क) थ = ढ

पढमो < प्रथमः–थ को ढ और अनुस्वार को ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मेढी < मेथिः–थ को ढ और इकार को दीर्घ।

सिढिलो < शिथिरः–तालव्य श को दन्त्य स, थ को ढ, रेफ को ल।

निसीढो < निशीथः–तालव्य श को दन्त्य स तथा थ को ढ।

पुढवी < पृथिवी–पकारोत्तर ऋकार को उकार और थ को ढ।

(ख) थ = ध

पिधं < पृथक्–पकारोत्तर ऋ को इत्व तथा थ के स्थान पर ध, अनुस्वार और अन्त्य हलन्त व्यंजन क का लोप।

(ग) थ = ह

निसीहो < निशीथः–तालव्य श को दन्त्य स और थ को ह।

कहइ < कथयति–थ के स्थान पर ह, विभक्ति चिह्न इ।

नाहो < नाथः–थ को ह।

मिहुणं < मिथुनम्–थ के स्थान पर ह और न को णत्व।

आवसहो < आवसथः–थ के स्थान पर ह।

(२२) संस्कृत का द वर्ण प्राकृत में ड, ध, र, ल, व और ह में परिवर्तित हो जाता है।

(क) द = ड

डंस < दंश–द के स्थान पर ड और तालव्य श को दन्त्य स।

डह < दह–द के स्थान पर ड।

कडणं, कयणं < कदनम्–द के स्थान पर विकल्प से ड, विकल्पाभाव में द का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

डड्ढो < दग्धः–द के स्थान में ड और ग्ध के स्थान पर ड्ढ।

डंडो < दण्डः–द के स्थान पर ड और विसर्ग को ओत्व।

डंभो < दम्भः– ,, ,, ,, ,,

डब्भो < दर्भः–द के स्थान पर ड, संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व और महाप्राण को अल्पप्राण।

डरो < दरः–द को ड और विसर्ग को ओत्व।

डसणं < दशनं–द को ड, तालव्य श को दन्त्य स तथा न को णत्व।

डाहो < दाहः–द को ड और विसर्ग को ओत्व।

डोला < दोला–विकल्प से द को ड।

डोहलो, दोहलो < दोहदः–द के स्थान में विकल्प से ड और अन्तिम द को ल।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) द = ध

धीप < दीप–द को ध।

धिप्पइ < दीप्यते–द के स्थान में ध, दीर्घ ई को ह्रस्व और विभक्ति चिह्न इ।

(ग) द = र–संख्यावाचक शब्दों में अनादि और असंयुक्त संस्कृत का द वर्ण प्राकृत में र हो जाता है।

एआरह < एकादश–क का लोप और आ स्वर शेष, द के स्थान पर र और श को ह।

बारह < द्वादश–संयुक्त द का लोप, द के स्थान पर र, श को ह।

तेरह < त्रयोदश–त्रय के स्थान पर ते, द को र, श को ह।

करली < कदली–द को र।

(घ) द = ल–

पलीवेइ < प्रदीपयति–संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, प को व, अकार को ए और विभक्ति चिह्न इ।

पलित्तं < प्रदीप्तम्–संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

दोहलो < दोहदः–अन्तिम द को ल।

कलंबो, कयंबो < कदम्बः–विकल्प से द को ल और विकल्पाभाव पक्ष में द का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

(ङ) द = व

कवट्टिओ < कदर्थितः–द के स्थान पर व, रेफ का लोप और थ को ट तथा द्वित्व, तकार का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(च) द = ह

कउहं < ककुदम्–मध्यवर्ती क का लोप, उ शेष तथा द के स्थान पर ह।

(२३) प्राकृत में संस्कृत का ध वर्ण ढ और ह में परिवर्तित होता है।

(क) ध = ढ

निसढो < निषधः–मूर्धन्य ष को दन्त्य स और ध को ढ।

ओसढं < औषधम्–औकार को ओकार, मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा ध को ढ।

(ख) ध = ह

इंदहणू < इन्द्रधनुः–संयुक्त रेफ का लोप, ध को ह, न को णत्व और उकार को दीर्घ।

बहिरो < बधिरः–ध को ह और विसर्ग को ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

बाहइ < बाधते–ध के स्थान में ह और विभक्ति चिह्न इ।

वाहो < व्याधः–संयुक्त य का लोप और ध को ह।

साहू < साधु–ध को ह और ह्रस्व उकार को दीर्घ।

(२४) प्राकृत में संस्कृत के न वर्ण का ण, ण्ह और ल में परिवर्तन होता है।

(क) न = ण–स्वर परवर्ती, एकपदस्थित और असंयुक्त न को ण होता है।

कणयं < कनकम्–न को णत्व, क लोप और अ स्वर को य श्रुति।

नयणं < नयनम्–न को णत्व।

मयणो < मदनः–मध्यवर्ती द का लोप और शेष अ स्वर के स्थान पर य श्रुति, न को णत्व।

वयणं < वचनम्–मध्यवर्ती च का लोप, अ स्वर के स्थान पर य, न को णत्वं।

वयणं < वदनम्–मध्यवर्ती द का लोप, अ के स्थान पर य तथा न को णत्व।

णई < नदी–न को णत्व, दकार का लोप और ई स्वर शेष।

णरो < नरः–न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

णेइ < नयति–न को णत्व और विभक्ति चिह्न इ।

(ख) न = ण्ह

ण्हाविओ < नापितः–न के स्थान पर विकल्प से ण्ह, प को व, तकार का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व, विकल्पाभाव में–नाविओ रूप।

(ग) न = ल

लिंबो < निम्बः–न को ल, विसर्ग को ओत्व।

(२५) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में फ, म, व और र में परिवर्तन होता है।

(क) प = फ

फणसो < पनसः–प के स्थान पर फ, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व।

फलिहो < परिधः–प के स्थान पर फ, र को ल, ध को ह और विसर्ग को ओत्व।

फलिहा < परिखा–प के स्थान पर फ, र को ल और ख के स्थान में ह।

फरुसो < परुषः–प को फ और मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

फाडि < पाटि–प को फ और ट को ड।

फालिहद्दो < पारिभद्रः–प को फ, र को ल, भ को ह और संयुक्त रेफ का लोप, द को द्वित्व तथा विसर्ग को ओत्व।

(ख) प = म

आमेलो < आपीडः–प के स्थान पर म, ईकार को एकार, ड को ल, विसर्ग को ओत्व

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

नीमो < नीपः–प को म, विसर्ग को ओत्व।

(ग) प = व

वहुत्तं < प्रभूतम्–संयुक्त रेफ का लोप और प को व, भ को ह तथा त को द्वित्व।

(घ) प = र

पारद्धी < पापर्द्धिः–यहाँ प के स्थान पर र, संयुक्त रेफ का लोप और दीर्घ।

(२६) संस्कृत के ब वर्ण का प्राकृत में भ, म और य में परिवर्तन होता है।

(क) ब = भ

भिसिणी < बिसिनी–ब के स्थान पर भ हुआ है।

(ख) ब = म

कमंधो < कबन्धः–मध्यवर्ती ब को मकार।

(ग) ब = य

कयन्धो < कबन्धः–ब के स्थान पर य और विसर्ग को ओत्व।

(२७) संस्कृत के भ वर्ण का प्राकृत में व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) भ = व

केढवो < कैटभः–ऐकार को एत्व, ट को ढ और भ को व।

(ख) भ = ह

नहं < नभस्–भ के स्थान पर ह।

पहा < प्रभा–संयुक्त रेफ का लोप और भ को ह।

सहा < सभा–भ को ह।

सहावो < स्वभावः–संयुक्त व का लोप, भ के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व।

सोहइ < शोभते –तालव्य श को दन्त्य स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ।

(२८) संस्कृत का म वर्ण प्राकृत में ढ, व और स में परिवर्तित होता है।

(क) म = ढ

विसढो < विषमः–मूर्धन्य ष को दन्त्य स और म को ढ।

(ख) म = व

वम्महो < मन्मथः–म के स्थान पर व तथा संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व, थ को ह।

अहिवन्नू < अभिमन्युः–भ को ह और म को व, संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ह्रस्व को दीर्घ।

(ग) म = स

भसलो < भ्रमरः–संयुक्त रेफ का लोप, म को स और रेफ को ल।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ध) म = अनुनासिक–निम्न शब्दों में मु के मकार का लोप हो जाता है और शेष स्वर उ के स्थान में अनुनासिक उँ हो जाता है।

अणिउँतयं<अतिमुक्तम्–मकार का लोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक उँ।

काउँओ < कामुक–मकार का लोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक उँ।

चाउँडा < चामुण्डा– ,, ,, ,, ,,

जउँणा < यमुना– ,, ,, ,, ,,

(२९) संस्कृत के य वर्ण का प्राकृत में आह, ज्ज, ज, त, ल, व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) य = आह

कइवाहं < कतिपयम्–तकार का लोप, इ स्वर शेष, प के स्थान में व और य को आह।

(ख) य = ज्ज

उत्तरिज्जं < उत्तरीयम्–री को ह्रस्व और य को ज्ज।

तइज्जो < तृतीयः–तकारोत्तर ऋकार को अ, त का लोप और शेष स्वर ई को ह्रस्व और य को ज्ज।

विइज्जो < द्वितीयः–संयुक्त द् का लोप, मध्यवर्ती त का लोप, शेष स्वर ई को ह्रस्व, य को ज्ज।

(ग) य = ज–संस्कृत शब्दों में आदि में आने वाला य प्राकृत में ज में बदल जाता है।

जमो < यम–य के स्थान पर ज, विसर्ग को ओत्व।

जसो < यशः– ,, तालव्य श को दन्त्य स और विसर्ग को ओत्व।

जाइ < याति–य को ज, त का लोप और इ स्वर शेष।

(घ) य = त

तुम्हकेरो < युष्मदीयः–युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और ईय को केर।

तुम्हारिसो<युष्मादृशः–युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और दृश के स्थान पर रिस।

तुम्ह < युष्मद्–युष्मद् के स्थान पर तुम्ह।

(ङ) य = ल

लट्ठी < यष्टिः–य के स्थान पर ल, संयुक्त ष का लोप, ट का द्वित्व और द्वितीय अल्पप्राण को महाप्राण, इकार को दीर्घ।

(च) य = व

कइअवं < कतिपयम्–त का लोप और इ स्वर शेष, प का लोप और अ स्वर शेष तथा य का व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(छ) य = ह

छाही < छाया–य के स्थान पर ह और आकार को ईत्व।

सच्छाहं < सच्छायम्–य को ह।

(३०) संस्कृत का र वर्ण प्राकृत में ड, ण और ल में बदल जाता है।

(क) र = ड

किडी < किरिः–र के स्थान पर ड, इकार को दीर्घ।

पिहडो < पिढरः–ढ के स्थान पर ह और र को ड।

भेडो < भेरः–र के स्थान पर ड।

(ख) र = ण

कणवीरो < करवीरः–र के स्थान पर ण।

(ग) र = ल

अवद्दालं < अपद्वारम्–संयुक्त व का लोप और द को द्वित्व, र को ल।

इंगालो < अङ्गारः–अकार को इकार और र को ल।

कलुणो < करुणः–र को ल।

काहलो < कातरः–त को ह और र को ल।

दलिद्दो < दरिद्रः–र को ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

दलिद्दाइ < दरिद्राति– ,, ,, ,,

दालिद्दं < दारिद्रयम्– ,, और य का लोप ,,

फलिहा < परिखा–प को फ, र को ल और ख को ह।

फलिहो < परिघः–प को फ, र को ल और घ को ह।

फालिहद्दो < पारिभद्रः–प को फ, र को ल, भ को ह तथा संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

भसलो < भ्रमरः–संयुक्त रेफ का लोप, म को स और र को ल।

मुहलो < मुखरः–ख को ह और र को ल।

जहुट्ठिलो < युधिष्ठिरः–य को ज, ध को ह, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती महाप्राण को अल्पप्राण, र को ल।

लुक्को < रुग्णः–र को ल और ग्ण को क्क।

वलुणो < वरुणः–र को ल।

सिढिलो < शिथिरः–तालव्य श को दन्त्य स, थ को ढ और र को ल।

सक्कालो < सत्कारः–संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और र को ल।

सोमालो < सुकुमारः–क का लोप, शेष स्वर उ का लोप तथा पूर्व स्वर उ को ओत्व, र को ल।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

थूलो < स्थूरः–संयुक्त स का लोप और र को ल।

थूलभद्दो < स्थूरभद्रः–संयुक्त स का लोप, र को ल, संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व।

हलिद्दो < हरिद्रः–र को ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

हलिद्दा < हरिद्रा– ,, ,, ,, ,,

जढलं, जढरं < जठरम्–ठ को ढ और र को विकल्प से ल।

निट्ठुलो, निट्ठुरो < निष्ठुरः–संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय अल्पप्राण को महाप्राण और र को ल।

(३१) संस्कृत का ल वर्ण प्राकृत में ण और र में परिवर्तित होता है।

(क) ल = ण णडालं, णिडालं < ललाटम्–ल के स्थान पर ण, ट को ड, वर्ण व्यत्यय होने से णडालम्, अकार को इत्व होने से णिडालं।

णंगलं, लंगलं < लङ्गलम्–ल को ण तथा ह्रस्व।

णाहलो, लाहलो < लाहलः–ल को ण।

(ख) ल = र

थोरं < स्थूलम्–संयुक्त स का लोप, ऊकार को ओत्व, र को ल।

(३२) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में भ और म में परिवर्तन होता है।

(क) व = भ

भिब्भलो, विब्भलो, विहलो < विह्वलः–व के स्थान पर भ।

(ख) व = म

समरो < शवरः–तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स, व को म।

वेसमणो < वैश्रवणः–ऐकार को एकार, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, व को म और विसर्ग को ओत्व।

नीमी < नीवी–व के स्थान पर म।

सिमिणो < स्वप्नः–संयुक्त वर्णों का पृथक्करण, इकारागम और व को म तथा न को णत्व।

(३३) संस्कृत के श वर्ण का छ, स और ह में परिवर्तन होता है।

(क) श = छ

छमी < शमी

छिरा < शिरा

छावो < शावः

(ख) श = स

कुसो < कुशः–श को स।

दस < दश– ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

निसंसो < नृशंसः–संयुक्त ऋकार को इत्व और श को स।
विसइ < विंशति–अनुस्वार का लोप, श को स और त का लोप, इ शेष।
बंसो < वंशः–श के स्थान पर स।
सद्दो < शब्दः–श को स, संयुक्त ब् का लोप और द को द्वित्व।
सामा < श्यामा–संयुक्त य का लोप, श को स।
सुद्धं < शुद्धम्–श को स।
सोहइ < शोभते–श को स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ।

(ग) श =ह

एआरह < एकादश–क लोप, अ स्वर शेष, द को र और श को ह।
दह < दश– श को ह।
दहबलो < दशबलः– ,,
दहमुहो < दशमुखः– ,, और ख को ह।
दहरहो < दशरथः–श को ह और थ के स्थान में भी ह।
बारह < द्वादश–संयुक्त द का लोप, द को र, श को ह।
तेरह < त्रयोदश–त्रय के स्थान में ते, द को र, श को ह।

(३४) संस्कृत के ष वर्ण का प्राकृत में छ, ण्ह और स में परिवर्तन होता है।

(क) ष = छ

छप्पहो < षट्पदः–षट् के स्थान पर छ और द को ह।
छमुहो < षण्मुहः– ,, ,,
छट्ठो < षष्ठः–ष के स्थान पर छ, संयुक्त ष का लोप और ठ को द्वित्व तथा प्रथम महाप्राण का अल्पप्राण।
छट्ठी < षष्ठी– ,, ,, ,,

(ख) ष = ण्ह

सुण्हा < स्नुषा–संयुक्त न का लोप और ष के स्थान में ण्ह।

(ग) ष = स

कसायो < कषायः–ष के स्थान में स।
निहसो < निकषः–क को ह और ष को स।
संडो < षण्डः–ष को स।

(३५) संस्कृत के स वर्ण का प्राकृत में छ और ह में परिवर्तन होता है।

(क) स = छ

छत्तवण्णो < सप्तपर्णः–स को छ, संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, प को व, संयुक्त रेफ का लोप और ण को द्वित्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

छुहा <सुधा–स के स्थान में छ आदेश और ध को ह।

(ख) स = ह

दिवहो < दिवसः–स के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व।

(३६) संस्कृत का ह वर्ण प्राकृत में घ और र में बदलता है।

सिंघो < सिंहः–ह के स्थान पर घ।

उत्थारो < उत्साहः–त्स को त्थ और ह के स्थान पर र।

(३७) संस्कृत की कई ध्वनियों का प्राकृत में लोप हो जाता है।

(क) स्वर लोप

रण्णं < अरण्यम्–अ का लोप।

लाऊ < अलाबू– ,,

(ख) व्यञ्जन लोप

पारो < प्राकारः–क का लोप।

वारणं < व्याकरणम्– ,,

आओ < आगतः–ग का लोप।

दणू < दनुजः–ज का लोप।

दणुवहो < दनुजबधः– ,,

भाणं–भाजनम्– ,,

राउलं < राजकुलम्– ,,

उंवरो < उदुम्बरः–द का लोप।

दुग्गावी < दुर्गादेवी– ,,

पावडणं < पादपतनम्– ,,

पावीढं < पादपीठम्– ,,

किसलं < किसलयम् –य का लोप

कालासं < कालायसम्– ,,

हिअं < हृदयं– ,,

सहिओ < सहृदयः– ,,

अडो < अवडो– व लोप।

अत्तमाणो < आवर्तमानः– ,,

एमेव < एवमेव–व लोप

जीअं < जीवितम्– ,,

देउलं < देवकुलम्– ,,

पारओ < प्रावारकः–,,

जा < यावत्– ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन

(३८) संस्कृत की क्ष ध्वनि का प्राकृत में ख, छ और झ होता है; परन्तु पद के मध्य या अन्त में क्ष के आने पर क्ख, च्छ और ज्झ हो जाता है।

(क) क्ष = ख

खओ<क्षयः–क्ष के स्थान पर ख और य लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

खीणं < क्षीणम्–क्ष के स्थान पर ख।

खीरं < क्षीरम्– ,, ,,

खेडओ < क्ष्वेटकः–क्ष को ख, ट को ड और क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

खोडओ < क्ष्वोटकः– ,, ,, ,,

इक्खू < इक्षुः–पद के मध्य में क्ष के होने से क्ख और उकार को दीर्घ।

रिक्खो < ऋक्षः–ऋ को रि ,, ,, विसर्ग को ओत्व।

रिक्खं < ऋक्षम्– ,, ,, ,,

मक्खिआ < मक्षिका–पद मध्य में रहने से क्ष को क्ख, ककार का लोप और आ स्वर शेष। –

लक्खणं < लक्षणम्–पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख।

पक्खीणं < प्रक्षीणम्–संयुक्त रेफ का लोप, पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख।

पक्खेवो < प्रक्षेपः– ,, ,, ,,

सारिक्खं < सादृक्ष्यम्–दृ के स्थान पर रि और पद के मध्य में रहने से क्ष्य का क्ख।

जक्खो < यक्षः–य को ज और क्ष का क्ख।

(ख) क्ष = छ

छणो < क्षणः–क्ष के स्थान पर छ।

छयं < क्षतम्–क्ष के स्थान पर छ, तकार का लोप, अस्वर शेष और यश्रुति।

छमा < क्षमा –क्ष के स्थान छ।

छारो < क्षारः– ,, ,,

छीणं < क्षीणम्– ,, ,,

छीरं < क्षीरम्– ,, ,,

छुण्णो < क्षुण्णः– ,, ,,

छीयं < क्षुतम्– ,, ,, और त लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति।

छुहा < क्षुधा–क्ष को छ तथा ध को ह।

छुरो < क्षुरः–क्ष को छ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

छेत्तं < क्षेत्रम्–क्ष को छ।

अच्छि < अक्षि–पद के मध्य में क्ष के रहने से क्ष के स्थान पर च्छ।

उच्छू < ईक्षुः–इ के स्थान पर उत्व, पद के मध्य में क्ष के होने से च्छ।

उच्छा < उक्षा–पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में च्छ।

रिच्छो < ऋक्षः–ऋ के स्थान पर रि और पद के मध्य में होने से क्ष को च्छ।

कच्छो < कक्षः–पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में च्छ।

कच्छा < कक्षा– ,, ,, ,, ,,

कुच्छी < कुक्षिः– ,, ,, ,, ,,

कुच्छेअयं < कौक्षेयकम्–औकार को उत्व, पद के मध्य में क्ष के होने से च्छ, य और क का लोप, अ स्वर शेष अन्तिम में य श्रुति।

दच्छो < दक्षः–पद के मध्य में होने से क्ष को च्छ।

पच्छीणं < प्रक्षीणम्– ,, ,,

मच्छिआ < मक्षिका– ,, ,,

लच्छी < लक्ष्मीः– ,, ,,

वच्छं < वक्षस्– ,, ,,

वच्छो < वृक्षः– ,, ,,

सरिच्छो < सदृक्षः– ,, ,,

सारिच्छं < सादृश्यम्– ,, ,,

(ग) क्ष = झ

झीणं < क्षीणं–क्ष के स्थान पर झ।

झिज्जइ < क्षीयते–क्ष के स्थान पर झ, ईकार को ह्रस्व, य को ज और द्वित्व, विभक्ति चिह्न इ।

पज्झीणं < प्रक्षीणम्–पद् मध्य में होने से क्ष के स्थान पर ज्झ।

(३९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्क और स्क के स्थान में ख होता है, पर पद के मध्य में आने से क्ख हो जाता है।

(क) ष्क = ख

निक्खं < निष्कम्–पद के मध्य में ष्क रहने से क्ख।

पोक्खरं < पुष्करम्– ,, ,,

पोक्खरिणी < पुष्करिणी– ,, ,,

(ख) स्क = ख

अवक्खन्दो < अवस्कन्दः–पद के मध्य में स्क रहने से क्ख।

खंदो < स्कन्दः–पद के आदि में स्क, रहने से ख आदेश।

खंधो– < स्कन्धः– ,, ,,

खंधावारो < स्कन्धावारः– ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण त्य का प्राकृत में च होता है, पर पद के मध्य में आने से च्च।

(क) त्य = च।

चाओ < त्यागः–पदादि में रहने से त्य के स्थान में च।

चाई < त्यागी– ,, ,,

चयइ < त्यजति– ,, ,,

पच्चओ < प्रत्ययः–पद के मध्य में रहने से त्य के स्थान में च्च।

पच्चूसो < प्रत्यूषः– ,, ,,

सच्चं < सत्यम्– ,, ,,

(४१) प्रयोगानुसार त्व को च, थ्व को छ, द्व को ज और ध्व को झ आदेश होता है, किन्तु पद के मध्य में इनके आने से उक्त वर्ण च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ हो जाते हैं।

(क) त्व = च

किच्चा < कृत्वा–पद के मध्य में होने से त्व के स्थान पर च्च।

चच्चरं < चत्वरम्– ,, ,,

णच्चा < ज्ञात्वा–ज्ञ के स्थान में ण तथा पद के मध्य में होने से त्वा के स्थान पर च्चा।

दच्चा < दत्वा–पद के मध्य में होने से त्व के स्थान में च्च।

भोच्चा < भुक्त्वा– ,, ,,

सोच्चा < श्रुत्वा–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स तथा उकार को ओत्व, पद मध्य में त्व के होने से च्च।

(ख) थ्व = छ

पिच्छी < पृथ्वी–प में संयुक्त ऋ के स्थान पर इत्व और पद के मध्य में थ्व के होने पर च्छ।

(ग) द्व = ज

विज्जं < विद्वान्–पद के मध्य में होने से द्व के स्थान पर ज्ज और आ को ह्रस्व अन्त्य हलन्त्य व्यंजन न् का अनुस्वार।

(घ) ध्व = झ

झओ < ध्वजः–पदादि में होने से ध्व का झ, ज का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

बुज्झा < बुध्वा–पद के मध्य में होने से ध्व के स्थान पर ज्झ।

सज्झसं < साध्वसम्–आ को ह्रस्व, पद के मध्य में होने से ध्व को ज्झ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४२) ह्रस्व स्वर से परे संस्कृत के संयुक्त वर्ण थ्य, श्च, त्स और प्स को प्राकृत में च्छ होता है।

(क) थ्य = च्छ

पच्छं < पथ्यम्–थ्य के स्थान पर च्छ।

पच्छा < पथ्या– ,, ,,

मिच्छा < मिथ्या– ,, ,,

सामच्छं < सामर्थ्यम्– ,, ,,

(ख) श्च = च्छ

अच्छेरं < आश्चर्यम्–आ को ह्रस्व, श्च को च्छ, र्य को इरं।

पच्छा < पश्चात्–श्च के स्थान पर च्छ और अन्त्य त् का लोप।

पच्छिमं < पश्चिमम्–श्च के स्थान पर च्छ।

विंछिओ < वृश्चिकः–व में संयुक्त ऋ को इ, श्च को छ तथा क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(ग) त्स = च्छ

संवच्छरो < संवत्सरः–त्स के स्थान पर च्छ।

उच्छवो < उत्सवः– ,, ,,

उच्छाहो < उत्साहः– ,, ,,

उच्छुओ < उत्सुकः– ,, ,,

मच्छरो < मत्सरः– ,, ,,

(घ) प्स = च्छ

अच्छरा < अप्सरा–प्स के स्थान पर च्छ।

जुगुच्छइ < जुगुप्सति– ,, ,,

लिच्छइ < लिप्सति– ,, ,,

(४३) पद के आदि में रहने वाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण द्य, य्य और र्य को प्राकृत में ज होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्ज हो जाता है।

(क) द्य = ज

जुई < द्युतिः–पदादि में द्य के रहने से ज, तकार का लोप और ह्रस्व इकार को दीर्घ ईकार।

जोओ < द्योतः–पदादि में रहने से द्य के स्थान में ज, त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अवज्जं < अवद्यम्–पद के मध्य में रहने से द्य का ज्ज।

मज्जं < मद्यम्– ,, ,, ,,

वेज्जो < वैद्यः– ,, ,, ,,

(ख) य्य = ज

जज्जो < जय्यः–य्य के पद मध्य में होने से ज्ज।

सेज्जा < शय्या– ,, ,, तालव्य श को दन्त्य स और अकार को एत्व।

(ग) र्य = ज

कज्जं < कार्यम्–पद के मध्य में र्य के रहने से ज्ज।

पज्जत्तं < पर्याप्तम्– ,, ,, तथा संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

पज्जाओ < पर्यायः–पद के मध्य में रहने से र्य को ज्ज।

भज्जा < भार्या–भा को ह्रस्व और पद के मध्य में होने से र्य को ज्ज।

मज्जाया < मर्यादा–पद के मध्य में होने से र्य को ज्ज तथा द का लोप, आ स्वर शेष और य श्रुति।

वज्जं < वर्यम् –पद के मध्य होने से र्य को ज्ज।

(४४) पद के आदि में रहने वाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण ध्य और ह्य को प्राकृत में झ होता है, किन्तु पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्झ होता है।

(क) ध्य = झ

झाणं < ध्यानम्–पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ तथा न को णत्व।

झायइ < ध्यायति–पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ।

विंज्झो < विन्ध्यः–पद के मध्य में ध्य के रहने से ज्झ।

सज्झं < साध्यम्–आ को ह्रस्व और पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ।

सज्झाओ < स्वाध्यायः–संयुक्त व का लोप और ह्रस्व, पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ।

(ख) ह्य = झ

गुज्झं < गुह्यम्–पद के मध्य में रहने वाले ह्य के स्थान पर ज्झ।

नज्झइ < नह्यति– ,, ,, ,, ,,

मज्झं < मह्यम्– ,, ,, ,, ,,

सज्झो < सह्यः– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४५) संस्कृत का संयुक्ताक्षर र्त सामान्यतः प्राकृत में ट्ट हो जाता है।

केवट्टो < कैवर्तः–ऐकार को एकार और र्त को ट्ट तथा विसर्ग को ओत्व।

जट्टो < जर्तः–र्त के स्थान पर ट्ट और विसर्ग का ओत्व।

नट्टई < नर्तकी–र्त के स्थान पर ट्ट तथा ककार का लोप, ई स्वर शेष।

पयट्टइ < प्रवर्तते–संयुक्त रेफ का लोप, र्त को ट्ट, विभक्ति चिन्ह इ।

रायवट्टयं < राजवर्तकम्–ज का लोप, अ स्वर शेष, य श्रुति, र्त को ट्ट तथा क का लोप अ स्वर को य श्रुति।

वट्टी < वर्ती–र्त को ट्ट।

वट्टलं < वर्तुलम्– ,,

वट्टा < वार्ता– ,,

संवट्टिअं < संवर्तितम्– ,,

(४६) संस्कृत के संयुक्ताक्षर म्न और ज्ञ के स्थान पर प्राकृत में ण होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर इनके स्थान में ण्ण होता है। व्यञ्जन से आगे रहने या दीर्घ स्वर के परे रहने से ण ही होता है।

(क) म्न = ण–

निण्णं < निम्नम्–पद के मध्य में म्न के आने से इसके स्थान में ण्ण।

पज्जुण्णो< प्रद्युम्नः –संयुक्त रेफ का लोप, द्यु को ज्जु और म्न के स्थान में ण्ण।

(ख) ज्ञ = ण

आणा < आज्ञा–दीर्घ स्वर से परे ज्ञा के रहने से ज्ञ के स्थान में ण।

पण्णा < प्रज्ञा–पदमध्य में ज्ञ के होने से ण्ण।

विण्णाणं < विज्ञानम्– ,, ,,

णाणं < ज्ञानम् –पदादि में ज्ञ के होने से ण।

संणा < संज्ञा–अनुस्वार–म् के परे रहने के कारण ज्ञ को ण।

(४७) संस्कृत का संयुक्त वर्ण स्त प्राकृत में थ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर त्थ होता है।

थवो < स्तवः–पदादि में स्त के होने से, उसके स्थान में थ।

थंभो < स्तम्भः– ,, ,, ,,

थद्धो < स्तब्धः– ,, ,, ,,

थुई < स्तुतिः– ,, ,, ,,

थोअं < स्तोकम्– ,, ,, ,,

थोत्तं < स्तोत्रम्– ,, ,, ,,

थीणं < स्त्यानम् – ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अत्थि < अस्ति–पदमध्य में स्त के होने से त्थ हुआ है।
पल्लत्थो < पर्यस्तः– ,, ,, ,,
पसत्थो < प्रशस्तः– ,, ,, ,,
पत्थरो < प्रस्तरः– ,, ,, ,,
हत्थो < हस्तः– ,, ,, ,,
विशेष–कुछ शब्दों में स्त का ख हो जाता है। यथा–
खंभो < स्तम्भः–यहाँ स्त के स्थान पर ख हुआ है।

(४८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ष्ट प्राकृत में ठ हो जाता है, पर पदमध्य में आने से ष्ट का ट्ठ होता है।

अणिट्ठं < अनिष्टम्–पदमध्य में रहने से ष्ट के स्थान पर ट्ठ।
इट्ठो < इष्टः– ,, ,, ,,
कट्ठं < कष्टम्– ,, ,, ,,
कट्ठं < काष्टम्– ,, ,, ,,
दट्ठो < दृष्टः– ,, ,, ,,
दिट्ठी < दृष्टिः– ,, ,, ,,
पुट्ठो < पुष्टः– ,, ,, ,,
मुट्ठी < मुष्टिः– ,, ,, ,,
लट्ठी <यष्टिः–पदमध्य में रहने से ष्ट के स्थान पर ट्ठ।
सुरट्ठा < सुराष्ट्रा– ,, ,, ,,
सिट्ठी < सृष्टिः– ,, ,, ,,
कोट्ठागारं < कोष्टागारम्– ,, ,,
सुट्ठु < सुष्ठु– ,, ,, ,,

(४९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ड्म और क्म के स्थान पर प्राकृत में प हो जाता है, पर पदमध्य में इन वर्णों के आने से प्प हो जाता है।

कुंपलं < कुड्मलम्–ड्म के स्थान पर प हुआ है।
रुप्पिणी < रुक्मिणी–पदमध्य में होने से क्म के स्थान में प्प हुआ है।

(५०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्प और स्प को प्राकृत में फ होता है, किन्तु पद मध्य में इन वर्णों के आने से प्फ हो जाता है।

(क) ष्प = फ–
निप्फाओ < निष्पावः–पद मध्य में रहने से ष्प के स्थान पर प्फ हुआ।
निप्फेसो < निष्पेषः– ,, ,, ,, ,,
पुप्फं < पुष्पम्– ,, ,, ,, ,,
सप्फं < शष्पम्– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) स्प = फ

फंदणं < स्पन्दनम्–पदादि में रहने से स्प के स्थान पर फ।

पडिप्फदी < प्रतिस्पर्धी–पद के मध्य में रहने से स्प के स्थान में प्फ।

वुहप्फई < बृहस्पतिः– ,, ,, ,, ,,

(५१) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह्व प्राकृत में भ हो जाता है, पर पद मध्य में आने पर विकल्प से ब्भ होता है।

जिब्भा, जीहा < जिह्वा–पद मध्य में रहने से ह्व के स्थान में विकल्प से ब्भ, विकल्पाभाव में संयुक्त व का लोप और पूर्व इकार को दीर्घ।

विब्भलो, विहलो < विह्वलः–पदमध्य में रहने से ह्व को विकल्प से ब्भ तथा विकल्पाभाव पक्ष में संयुक्त व का लोप और विसर्ग का ओत्व।

(५२) संस्कृत का संयुक्त वर्ण न्म प्राकृत में म्म हो जाता है।

जम्मो < जन्म–न्म के स्थान पर म्म।

बम्महो < मन्मथः–न्म के स्थान पर म्म तथा थ के स्थान में ह, विसर्ग को ओत्व।

मम्मणं < मन्मनः–न्म के स्थान पर म्म तथा नकार को णत्व।

(५३) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ग्म के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से म्म का परिवर्तन हो जाता है।

तिम्मं, तिग्गं < तिग्मम्–ग्म के स्थान पर विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व।

जुम्मं, जुग्गं < युग्मम्–य को ज, ग्म को विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व।

(५४) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्म, ष्म, स्म, ह्म और क्ष्म के स्थान पर प्राकृत में म्ह हो जाता है।

(क) श्म = म्ह

कम्हारा < कश्मीराः–श्म के स्थान में म्ह तथा ईकार को आकार।

कुम्हाणो < कुश्मानः–श्म के स्थान में म्ह आदेश और नकार को णत्व।

(ख) ष्म = म्ह

उम्हा < ऊष्मा–ष्म के स्थान पर म्ह तथा ऊ को ह्रस्व।

गिम्हो < ग्रीष्मः–ष्म को म्ह, संयुक्त रेफ का लोप और ईकार को ह्रस्व।

(ग) स्म = म्ह

अम्हारिसो < अस्मादृशः–स्म के स्थान पर म्ह, दृश के स्थान पर रिस, विसर्ग को ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

विम्हओ < विस्मयः–स्म के स्थान में म्ह, यकार का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(घ) ह्म = म्ह

बम्हा < ब्रह्मा–ह्म के स्थान पर म्ह, संयुक्त रेफ का लोप।

बम्हणो < ब्राह्मणः– ,, ,, ,, और आ को ह्रस्व।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्–ह्म के स्थान पर म्ह, ब्र के संयुक्त रेफ का लोप और चर्यं की चेरं।

सुम्हा < सुह्माः–ह्म के स्थान पर म्ह।

(ङ) क्ष्म = म्ह

पम्हलं < पक्ष्मलम्–क्ष्म के स्थान पर म्ह।

पम्हाइं < पक्ष्माणि– ,, ,,

(५५) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण और सूक्ष्म शब्द के क्ष्म के स्थान में प्राकृत में ण्ह हो जाता है।

(क) श्न = ण्ह

पण्हो < प्रश्नः–प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, श्न के स्थान पर ण्ह, विसर्ग को ओत्व।

सिण्हो < शिश्नः–तालव्य श के स्थान में दन्त्य स तथा श्न के स्थान पर ण्ह।

(ख) ष्ण = ण्ह

उण्हीसं < उष्णीषम्–ष्ण के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

कण्हो < कृष्णः–क में रहने वाली ऋ के स्थान में अ और ष्ण के स्थान में ण्ह, विसर्ग का ओत्व।

जिण्हू < जिष्णुः–ष्ण के स्थान पर ण्ह, उकार को दीर्घ।

विण्हू < विष्णुः– ,, ,, ,,

(ग) स्न = ण्ह

जोण्हा < ज्योत्स्ना–संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त त का लोप और स्न के स्थान में ण्ह।

पण्हुओ < प्रस्नुतः–प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, स्न के स्थान पर ण्ह, त का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

ण्हाओ < स्नातः–स्न के स्थान में ण्ह, त का लोप और अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(घ) ह्न = ण्ह

जण्हू < जह्नुः–ह्न के स्थान पर ण्ह और उकार को दीर्घ।

वण्ही < वह्निः– ,, ,, और इकार को दीर्घ।

(ङ) ह्ण = ण्ह

अवरण्हो < अपराह्णः–प के स्थान पर व, ह्ण के स्थान पर ण्ह।

पुव्वण्हो < पूर्वाह्णः–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और आ को अत्व तथा ह्ण के स्थान में ण्ह।

(च) क्ष्ण = ण्ह

तिण्हं < तीक्ष्णम्–ई को ह्रस्व, क्ष्ण के स्थान में ण्ह।

सण्हं < श्लक्ष्णम्–संयुक्त ल का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, क्ष्ण के स्थान में ण्ह।

क्ष्म = ण्ह

सण्हं < सूक्ष्मम्–सू के स्थान पर स और क्ष्म को ण्ह।

(५६) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह्र प्राकृत में ल्ह हो जाता है।

कल्हारं < कह्लारम्–ह्र के स्थान में ल्ह।

पल्हाओ < प्रह्लादः– ,, ,,

(५७) संस्कृत का ज्ञ वर्ण प्राकृत में विकल्प से ज होता है, पर पदमध्य में आने से ज्ज होता है।

अहिज्जो, अहिण्णो < अभिज्ञः–भ के स्थान पर ह, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

अज्जा, आणा < आज्ञा–पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर ज्ज, विकल्पाभाव में ण।

अप्पज्जो, अप्पण्णू < आत्मज्ञः–आत्म के स्थान पर अप्प, ज्ञ के स्थान पर पदमध्य में रहने से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

इंगिअज्जो, इंगिअण्णू < इंगितज्ञः–पदमध्य में ज्ञ के रहने से विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

देवज्जो, देवण्णू < दैवज्ञः–ऐकार को एकार, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा–पदमध्य में ज्ञ के रहने से ज्ञ को विकल्प से ज्ज तथा विकल्पाभाव में ण्ण।

पज्जो, पण्णो < प्राज्ञः– ,, ,, ,, ,,

मणोज्जं, मणुण्णं < मनोज्ञम्– ,, ,, ,, ,,

सव्वज्जो, सव्वण्णू < सर्वज्ञः– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संजा, संणा < संज्ञा–व्यञ्जन से परे रहने के कारण ज्ञ को ज, विकल्पाभाव में ण।

(५८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण र्ह प्राकृत में रिह हो जाता है।

अरिहइ < अर्हति–अर्ह के स्थान पर रिह, त का लोप और इ शेष।

अरिहो < अर्हः– ,, ,, ,,

गरिहा < गर्हा– ,, ,, ,,

वरिहो < वर्हः– ,, ,, ,,

(५९) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जन र्श और र्ष के स्थान पर प्राकृत में रिस होता है।

(क) र्श = रिस

आयरिसो < आदर्शः–र्श के स्थान पर रिस हुआ है।

दरिसणं < दर्शनम्– ,, ,,

सुदरिसणं < सुदर्शनम् ,, ,,

(ख) र्ष = रिस

वरिसं < वर्षम्–र्ष के स्थान पर रिस हुआ है।

वरिससंयं < वर्षशतम्– ,, ,,

वरिसा < वर्षा– ,, ,,

(६०) संस्कृत के संयुक्त ल के स्थान पर प्राकृत में इल होता है।

अंबिलं < अम्लम्–संयुक्त ल के स्थान पर इल हुआ है, म के स्थान पर पूर्व स्वर पर अनुस्वार के साथ ब हुआ है।

किलम्मइ < क्लाम्यति–संयुक्त ल के स्थान पर इल, म्य को म्म, विभक्ति इ।

किलंतं < क्लाम्यत्–संयुक्त ल को इल।

किलिट्ठं < क्लिष्टम्– ,, ,,

किलिन्नं < क्लिन्नम्– ,, ,,

किलेसो < क्लेशः– ,, ,,

गिलाइ < ग्लायति– ,, ,,

गिलाणं < ग्लानम्– ,, ,,

पिलुट्ठं < प्लुष्टम्– ,, ,,

पिलोसो < प्लोषः– ,, ,,

मिलाइ < म्लायति– ,, ,,

मिलाणं < म्लानम्– ,, ,,

सिलेसो < श्लेषः– ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सिलिम्हा < श्लेष्मा–संयुक्त ल को इल।
सिलोओ < श्लोकः– ,,
सिलिट्ठं < श्लिष्टम्– ,,
सुइलं < शुक्लम्– ,, संयुक्त क का लोप, तालव्य श को दन्त्य स।

(६१) संस्कृत के 'र्य' संयुक्त व्यञ्जन को प्राकृत में रिअ होता है।

आयरिओ < आचार्यः–चकार का लोप, आ शेष, य श्रुति, ह्रस्व और र्य के स्थान पर रिअ।
गंभीरिअं < गाम्भीर्यम्–दीर्घ को ह्रस्व और र्य को रिअ।
गहीरिअं < गाभीर्यम्– ,, ,,
चोरिअं < चौर्यम्–औकार को ओकार और र्य के स्थान पर रिअं।
धीरिअं < धैर्यम्–ऐकार की ईत्व और र्य को रिअं।
बम्हचरिअं < ब्रह्मचर्यम्–संयुक्त रेफ का लोप, ह्म को म्ह और र्य को रिअ।
भरिआ < भार्या–र्य को रिअ।
वरिअं < वर्यम्– ,,
वीरिअं < वीर्यम्– ,,
थेरिअं < स्थैर्यम्–संयुक्त स का लोप, ऐकार को एकार, र्य को रिअ।
सूरिओ < सूर्यः–र्य को रिअ।
सुन्दरिअं < सौन्दर्यम्–औकार को उकार, र्य को रिअ।
सोरिअं < शौर्यम्–र्य को रिअ।

(६२) संस्कृत के संयुक्त व्यंजनों में कुछ विशेष परिवर्तन भी होता है।

(क) ग्ण =क्क
लुक्को < रुग्णः–ग्ण के स्थान पर क्क और रु को लु।

(ख) क्ष्ण = क्ख
तिक्खं < तीक्ष्णम्–ती को ह्रस्व तथा क्ष्ण के स्थान पर क्ख।

(ग) स्त = ख
खंभो < स्तम्भ–स्त के स्थान पर ख।

(घ) स्फ = ख
खेडओ < स्फटकः–स्फ के स्थान पर ख।

(ङ) त्त = च्च
किच्ची < कृत्तिः–त्त के स्थान पर च्च।

(च) थ्य = च्च
तच्चं < तथ्यम्–थ्य के स्थान पर च्च।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(छ) स्प = छ

छिहा < स्पृहा–

(ज) त्त = ट्ट

पट्टणं < पत्तनम्–त्त के स्थान पर ट्ट।

मट्टिआ < मृत्तिका–त्त के स्थान पर ट्ट।

(झ) र्थ =ट्ठ

अट्ठो < अर्थः–र्थ के स्थान पर ट्ठ।

चउट्ठो < चतुर्थः– ,, ,,

(ञ) र्त = ड्ड

गड्डो < गर्तः–र्त के स्थान पर ड्ड।

(ट) र्द = ड्ड

कवड्डो < कपर्दः–र्द के स्थान पर ड्ड।

छड्डो < छर्दः– ,, ,,

छड्डी < छर्दिः– ,, ,,

मड्डिओ < मर्दितः– ,, ,,

विच्छड्डो < विच्छर्दः– ,, ,,

संमड्डो < संमर्दः– ,, ,,

(ठ) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध = ड्ढ–

अड्ढं < अर्धम्–र्ध के स्थान पर ड्ढ।

ईड्ढी < ऋद्धिः–द्ध के स्थान पर ड्ढ।

दड्ढो < दग्धः–ग्ध के स्थान पर ड्ढ।

विअड्ढो < विदग्धः–,, ,,

वुड्ढो < वृद्धः–द्ध के स्थान पर ड्ढ।

वुड्ढी < वृद्धिः– ,, ,,

सड्ढा < श्रद्धा– ,, ,,

ठड्ढो < स्तब्धः–ब्ध के स्थान पर ड्ढ।

(ड) ञ्च = ण्ण– ,, ,,

पण्णरह < पञ्चदश–ञ्च के स्थान पर ण्ण।

पण्णासा < पञ्चाशत्– ,, ,,

(ढ) त्त = ण्ण–

दिण्णं < दत्तम्–त्त के स्थान पर ण्ण।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ण) त्म = प्प

अप्पा < आत्मा–त्म के स्थान पर प्प।

अप्पाणो < आत्मानः– ,, ,,

(त) म्र = म्ब

अंबं < आम्रम्–म्र के स्थान पर म्ब।

तंबं < ताम्रम्– ,, ,,

(थ) ह्म = भ्म

बम्भणो < ब्राह्मणः–ह्म के स्थान पर म्भ।

बंभचेरं < ब्रह्मचर्यम् ,, ,,

(द) क्ष, ख, र्थ, र्घ, र्ष, ष्प और ष्म = ह

दाहिणो < दक्षिणः–ख के स्थान पर ह।

दुहं < दुःखम्–क्ष के स्थान पर ह।

तूहं < तीर्थम्–र्थ के स्थान पर ह।

दीहो < दीर्घः–र्घ के स्थान पर ह।

काहावणो < कार्षापणः–र्ष के स्थान पर ह।

वाहो < वाष्पः–ष्प के स्थान पर ह।

कोहण्डी < कुष्माण्डी–ष्म के स्थान पर ह।

कोहण्डं < कुष्माण्डम्– ,,

(६३) निम्न वर्णों को प्राकृत में द्वित्व हो जाता है।

उज्जू < ऋजुः–ज को द्वित्व। जोव्वणं < यौवनम्–व को द्वित्व।

तेल्लं < तैलम्–ल को द्वित्व। बहुत्तं < प्रभूतम्–त को द्वित्व।

पेम्मं < प्रेमं–म को द्वित्व। मंडुक्को < मण्डूकः–क को द्वित्व।

विड्डा < व्रीडा–ड को द्वित्व। एक्को < एकः–क को द्वित्व।

कण्णिआरो < कर्णिकारः–ण को द्वित्वं। कोउहल्लं–कुतूहलं–ल को द्वित्व।

तुण्हिक्को < तूष्णीकः–क को द्वित्व। नक्खो < नखः–ख को द्वित्व।

दइव्वो < दैवः–व को द्वित्व। नेड्डुं < नीडम्–ड को द्वित्व।

मुक्को < मूकः–क को द्वित्व।

(६४) निम्न शब्दों में अनियमतः परिवर्तन होते हैं–

अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं < आश्चर्यम्।

केलं, कयलं < कदलम्। कोहलं < कुतूहलम्।

चोग्गुणो < चतुर्गुणः। चोत्थो, चउत्थो < चतुर्थः।

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी। चोद्दहो, चउद्दह < चतुर्दशः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

चोद्दसी, चउद्दसी < चतुर्दशी।
चोव्वारो, चउव्वारो < चतुर्वारः।
तेत्तीसा < त्रयस्त्रिंशत्।
तेरहो < त्रयोदशः।
तेवीसा < त्रयोविंशतिः।
तीसा < त्रिंशत्।
नोणीअं, लोणीअं < नवनीतम्।
नोहालिआ < नवफलिका।
नोमालिआ < नवमल्लिका।
पोप्फलं < पूगफलम्।
पोरो < पूतरः।
पाउरणं, पगुरणं < प्रावरणम्।
बोरं < बदरम्।
मोहो, मऊहो < मयूखः।
रुण्णं < रुदितम्।
लोणं < लवणम्।
वीसा < विंशतिः।
सोमालो < सुकुमारः।
थेरो < स्थविरः।

(६५) निम्न शब्दों में आमूल परिवर्तन हो जाता है।

हेट्ठं < अधस्।
ओ, अव < अप।
अच्छरसा < अप्सरस्।
आउसं < आयुः।
आढत्तो < आरब्धः।
धूआ < दुहिता।
दाढा < दंष्ट्रा।
हरो < हृदः।
धणुहं < धनुष्।
इसि < ईषत्।
ओ < उत।
ओ < उप।
अवहं, उवहं < उभयस्।
कउहा < ककुम्।
छूदं < क्षिप्तम्।
घरं < गृहम्।
घिक्को < द्युप्तः।
तिरिच्छि < तिर्यक्।
पाइक्को < पदाति।
बहिणी < भगिनी।
मइलं < मलिनम्।
मंजरो < मार्जारः।
विलया < वनिता।
रुक्खो < वृक्षः।
वेसलिअं < वैडुर्यम्।
सिप्पी < शुक्तिः।
थेवं, थीवं, थोक्कं < स्तोकम्।
सुसाणं, मसाणं < श्मशानम्।

(६६) निम्न शब्दों में वर्णव्यत्यय हुआ है।

अलचपुरं < अचलपुरम्।
आणालो < आलानः।
कणेरू < करेणूः।
मरहट्ठं < महाराष्ट्रम्।
हलुअं < लघुकम्।
णडालं < ललाटम्।
वाणारसी < वाराणसी।
हलिआरो < हरितालः।
दहो < द्रहः, ह्रदः।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY